देहान्तर

नन्दकिशोर आचाय के दो नाटक



वाग्देवी प्रकाशन
बीकानेर

देहान्तर

नन्दकिशोर आचार्य



वाग्देवी प्रकाशन
सुगन निवास चन्दन सागर
बीकानेर 334 001

नाटक की रंगमंचीय प्रस्तुति के लिए
लेखक से पूर्व अनुमति लेना अनिवार्य है।

नन्दकिशोर आचार्य
सुथारों की बड़ी गुवाड़,
बीकानेर 334 001

© नन्दकिशोर आचार्य

प्रथम संस्करण 1987
द्वितीय संस्करण 1990

मूल्य पचास रुपये मात्र

आवरण अमित भारती

मुद्रक सांखला प्रिंटर्स
सुगन निवास चन्दन सागर
बीकानेर 334 001

ISBN 81 85127 24 7

DEHANTAR by Nand Kishore Acharya

Rs 50 00

मेरी आत्मा की परम चेतना-रूप !
मेरी शांति !

'—आज के बाद तुमसे माँगना नहीं करूँगा
क्योंकि तुम सम्पूर्ण मेरी हो
तुम्हें तुम ही कहूँगा।—

[illegible]

প্রেম

देहान्तर

देहान्तर की प्रथम प्रस्तुति प्रसिद्ध नाट्य मण्डली अभिनेत द्वारा 28 फरवरी, 1986 को चंडीगढ़ में हुई।

निर्देशक	पहलाद अग्रवाल
	वीरेन्द्र महदीरत्ता

पात्र

शर्मिष्ठा	गोरडी मल्होत्रा
ययाति	अरविन्द नन्दा
पुरु	कृष्णकुमार चातिया
विदुमती	सपना मल्होत्रा
मगन	अनिता शर्मा
रक्षक	रवि मल्होत्रा

एक अविस्मरणीय स्मृति

किसी भी नाटक को प्रस्तुत करने से पहले रगमण्डली *अभिनेत* के सदस्यो के सम्मुख नाट्यकृति का पढा जाना मात्र औपचारिकता नही है—एक पूरा अनुभव है। इस तरह की सभाओ मे हुई चर्चा-परिचर्चा के दौरान हमेशा नाटक की रग-सरचना के बारे म ज्ञान बढा है और नाटक की समझ मे भी वृद्धि हुई है। असल म इस मण्डली मे विविध क्षेत्रो के ममज्ञ हैं प्रोफेसर हैं, इजीनियर और आर्किटेक्ट हैं, व्यवसायी हैं और चित्रकार भी, प्रशासक और छात्र-छात्राएँ भी। इसलिए हमारी इस मण्डली मे जिस दिन *चयन की दृष्टि से नाटक का पाठ होता है, उसी दिन से नाटक के विविध पक्षो* और उसकी परतो की पहचान की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। विशेष रूप से जब नाटक कुछ सदस्यो को पसन्द आये और कुछ को न आये—तब तो केवल परतें ही नही खुलती, बखिये भी उघडने लगते हैं। किन्तु देहान्तर के पाठ के बाद ऐसा कुछ नही हुआ और सभी सदस्यो ने मुक्त कण्ठ से इसकी प्रशसा की और इसे *अभिनेत* द्वारा प्रस्तुत करने के लिए स्वीकार कर लिया गया। देहान्तर बाह्य एव भीतरी तनावपूर्ण स्थितियो से भरपूर अपने मे पूर्ण सश्लिष्ट नाट्यकृति है और इसका सुसगठित रूपाकार एव रगशिल्प का सौष्ठव इस कृति का आकर्षण केन्द्र माना गया। इस नाटक म तनावपूर्ण नाटकीय स्थितियो का समुचित सयोजन है और इतनी क्षिप्रता भी है कि प्रेक्षक को निरन्तर उलझाये रखे, आकार म छोटा है पात्रो की सख्या कम है तथा बिना किसी रगमचीय तामझाम के खेला जा सकता है।

पिछले कुछ वर्षों के रगकर्म के बाद मेरा यह विश्वास बनता जा रहा है कि निर्देशक की प्रतिभा से चमत्कारी रगतन्त्र के सहयोग से रूप लेने वाली नाट्य प्रस्तुति भले कितनी ही प्रभावपूर्ण क्यो न हो, उससे किसी भी भाषा के रग आन्दोलन को शक्ति नही मिलती। ऐसी प्रस्तुतियाँ रगमच का स्तर भले ही दें, गति नही देती। ठीक इसी तरह से ऐसे नाटक जो जटिल रगतन्त्र का आश्रय लेकर ही प्रस्तुत किये जा सकें—रग आन्दोलन को गति नहीं देते। रग-आन्दोलन को शक्ति मिलती है साहित्यिक गरिमामण्डित रग नाटको से। मोहन राकेश तथा सुरेन्द्र वर्मा के नाटक इसी कोटि के मानता

हैं। हिन्दी नाटककारों को एक और बात का ध्यान भी अवश्य रखना चाहिए कि वह ऐसा नाटक लिखे जो भारतीय रंग स्थिति के अनुकूल हो और सुविधा के साथ भारत के अत्यन्त दूर तरफ के शहरों में खेला जा सके — क्योंकि नाटक एक सामूहिक रचनाक्रिया है और इसकी सार्थकता व्यापक प्रदर्शनों में निहित है। भारत में वही नाटक सफल माना जायगा जिसके दो चार प्रदर्शनों में ही उसके रंग सामर्थ्य का अनुमान हो जाय और फलस्वरूप अपने आप ही उसका अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद होने लगे। आधे अधूरे, हयवदन, रापी इतिहास, घासीराम कोतवाल कुछ इसी प्रकार के नाटक हैं। देहान्तर में भी इसी प्रकार के नाटकों की बहुत-सी खूबियाँ हैं।

इस नाटक को हमने एक एम हॉल में खेलने का फैसला किया जहाँ प्रकाश योजना की थोड़ी सुविधा थी। दृश्यबन्ध के नाम पर एक दीपाधार, एक शयन शैया और बैठने के एक आसन के अलावा किसी रंग उपकरण का प्रयोग नहीं किया। शैया दो एक दृश्यों में बनती जिन्हें उठाकर आसानी से एक जगह से दूसरी जगह रखा जा सके। मंच पर उस शैया पर नीले लाल और पीले रंग की चादरों तथा स्थान परिवर्तन से उसे शर्मिष्ठा के निजी कक्ष, ययाति के शयन कक्ष, तथा पुरु के कक्ष में परिवर्तित किया गया। इस रंग परिवर्तन ने अलग अलग कक्षों के संकेत इतने प्रभावी ढंग से दिये कि स्वयं को भी आश्चर्य हुआ। पहले दृश्य में तथा शर्मिष्ठा के कक्ष में दीपाधार का प्रमुख स्थान पूरे दृश्य की संवेदना को प्रकट करने तथा सम्प्रेषित करने में सहायक सिद्ध हुआ। दीपाधार को मंच में बायीं ओर अग्रभाग में रखा था। नाटक के अनेक संवेदनपूर्ण स्थलों की योजना बायीं ओर के अग्रभाग में करना उपयोगी समझा गया। पात्रों के कार्य व्यापार की दृष्टि से केवल उपयोगी रंगसभा द्वारा दृश्यबन्ध की योजना का सिद्धान्त हमारी मण्डली के अध्यक्ष नवीनचन्द्र ठाकुर का ही नहीं रंगसज्जाकार जान्थिय प्रकाश का भी है। रंगमंच को राजसी स्वरूप देने के लिए बहुत साधन पर भी विशेष कुछ नहीं किया। मैंने अनुभव किया कि अभिनेताओं की वेशभूषा राजसी स्वरूप देने में पर्याप्त है। चादरों के रंगों के अनुरूप प्रकाश योजना में प्रतीकात्मक रंगों का प्रयोग उपयोगी सिद्ध हुआ।

देहान्तर नाटक की सबसे बड़ी विशेषता है तनावपूर्ण नाट्यपरिस्थितियों की कुशल योजना और उसके परिणाम स्वरूप शर्मिष्ठा, ययाति, विदुमती तथा पुरु का मानसिक द्वन्द्व। इस प्रस्तुति में ययाति की भूमिका में अरविन्द नन्दा उपयुक्त थे और बड़ी महारत के साथ उन्होंने भूमिका की बारीकियों को समझा। प्रत्येक संवाद के पीछे छिपे द्वन्द्व को उत्तरोत्तर जस जस समझते

गये, ययाति का व्यक्तित्व अधिक उभर कर सामने आने लगा। नाटककार ने ययाति के जीवन की विडम्बना को बहुत ही कुशलता से रूप दिया है। जीवन के पूर्ण उपभोग में विश्वास रखने वाला ययाति सदा ही विडम्बनापूर्ण स्थिति को जीता है। देवयानी से विवाह किया, किन्तु देवयानी कच के प्रेम से कभी मुक्त नहीं हो पायी— इसलिए पूर्णरूप से उसे प्राप्त नहीं कर पाया। शर्मिष्ठा से गुप्त विवाह किया, किन्तु शुक्राचार्य का डर बना रहा और इस रहस्य के प्रकट होते ही शाप झेलना पड़ा। शर्मिष्ठा को उन्मुक्त रूप से पाने के लिए शाप मुक्ति मिली और अपने पुत्र से यौवन उधार लिया— किन्तु वह मिला शर्मिष्ठा के ही पुत्र पुरु से। इस से शर्मिष्ठा की स्थिति और भी विडम्बनापूर्ण हो गयी। पति में पुत्र के रूप तथा यौवन के कारण अब भी उन्मुक्त समागम सम्भव नहीं हुआ। शर्मिष्ठा को लगता है जैसे उस का पुत्र ही उस का उपभोग कर रहा है और उस सारी स्थिति से वितृष्णा होने लगी। वह ययाति से बचने लगी। नाटककार ने बहुत थोड़े संवादों द्वारा इस पूरी स्थिति का निरूपण किया है। कुशल अभिनेता अथवा अभिनेत्री के सम्मुख यह एक बहुत बड़ी चुनौती होती है जब नाटककार गहरे मानसिक द्वन्द्व की बात कम शब्दों द्वारा व्यक्त करना चाहता है। इस चुनौती का सबसे अधिक सामना करना पड़ा शर्मिष्ठा की भूमिका में गार्गी मल्होत्रा को। इस चुनौती को उन्होंने स्वीकार किया और कहीं-कहीं बहुत ही मार्मिक अभिनय किया। पति की देह में पुत्र के रूप का महसूस करने के द्वन्द्व और दुविधा को व्यक्त करने में उन्हें पर्याप्त सफलता मिली। जिस कलात्मक संयम से मार्मिक स्थलों की संवेदना को प्रक्षेपित किया, उससे इस प्रस्तुति को प्राण मिले।

प्रेम नहीं, केवल रमण करने वाली देवलोक के महाराज इन्द्र की पुत्री विन्दुमती को क्या रूप दिया जाय? मंच पर उसका प्रवेश कैसे कराया जाय? उसकी भंगिमाओं और चर्चाओं द्वारा उसके देवलोकवासिनी होने का आभास कैसे दिया जाय? इस भूमिका को निभाने वाली सपना मल्होत्रा नृत्य में रुचि रखती थी। इसलिए नृत्य मुद्राओं, नृत्य गतियों एवं नृत्य भंगिमाओं द्वारा विन्दुमती के व्यक्तित्व की विशिष्टता को आकार देने का प्रयास किया। उस की उन्मुक्त हँसी में उस के व्यक्तित्व के क्रीडाभाव का व्यक्त किया। नाटककार ने विन्दुमती के द्वन्द्व का भी स्वरूप दिया है। [illegible] वीरता और शौर्य के प्रति आकृष्ट होकर उसे पाने के लिए विन्दुमती [illegible] से मृत्युलोक आती है। तब तक पुरु का यौवन ययाति [illegible] है, इसलिए ययाति का वरण कर लेता है। किन्तु उसकी [illegible] भी पूरी नहीं होती और वह भी कहीं टूटती है। विन्दुमती [illegible]

साक्षात्कार कराती है। अपनी नियति को स्वीकार करने में ही प्रत्येक व्यक्ति की मुक्ति है। इस आत्म-साक्षात्कार के पश्चात् ही ययाति उन्मुक्त भाव से अपना बुढ़ापा स्वीकार कर सका तथा पुरु की व्यथा को दूर कर सका। ययाति जैसा भी है पुरु का पिता है, पुरु का इतिहास ययाति का जीवन है और लाख चाहने से भी वह उस से मुक्त नहीं हो सकता। हम अपने माता पिता के चुनाव में स्वतन्त्र नहीं हैं। हमारे अस्तित्व की शुरुआत यहीं से होती है और नियति के स्वीकार का पहला पाठ यहीं स्थिति देती है।

चरमस्थिति का यह बिन्दु बहुत महत्त्वपूर्ण है, किन्तु मात्र दो छोटे-छोटे संवादों से इसे पूर्ण प्रक्षेपण मिलता नहीं लगता। बहुत सचेत और जागरूक प्रेक्षक ही इस बिन्दु को पकड़ पाता है। निर्देशक किस प्रकार इस विचार को सम्प्रेषित करे, यह बहुत बड़ी समस्या है। यहाँ नाटककार को किसी व्याख्यात्मक संवाद या किसी नाटकीय स्थिति की योजना करनी चाहिए थी जिससे सामान्य प्रेक्षक भी विचार करने पर विवश हो।

निर्देशन के काम में मुझ से कहीं अधिक सक्रिय थे मेरे परम मित्र और सहयोगी पहलाद अग्रवाल। संवादों के सहयोग से ही दृश्य बिम्ब और नाटकीय गतियों को रूप देने में उन्होंने बहुत ही सूझबूझ का परिचय दिया। निर्देशन सम्बन्धी सभी प्रकार के कार्य को स्वयं झेल कर जिस उदारता के साथ मुझे उस का मान दिया उसके लिए कैसे उनका धन्यवाद करूँ, समझ नहीं पाता। निर्देशन की यह प्रक्रिया सभी रंग-कर्मियों के लिए सुखद रही अनजाने ही नाटक का मूल स्वर सभी रंग-कर्मियों तक भली भाँति पहुँच गया था। सब ने अपनी नियति स्वीकार कर ली थी—और इस स्वीकार का परिणाम था एक सुखद अनुभूति, एक अविस्मरणीय स्मृति।

चण्डीगढ़। —वीरेन्द्र मेहंदीरत्ता

अक प्रथम

पहला प्रवेश

राजमहल म शर्मिष्ठा का निर्जी कक्ष। अँधेरा सा। शर्मिष्ठा एक ओर बठी है। मगला का प्रवेश। उस की पदचाप सुनकर शर्मिष्ठा उठकर देखती है। दोनों की बातचीत के दौरान मगला कोनों मे दीपक जलान का अभिनय करती है। मच पर धीरे धीरे प्रकाश होता है।

शर्मिष्ठा कौन ? मगला ?

मगला दासी प्रणाम निवदन करती ह। क्षमा करें, किसी न अभी तक दीपक नही जलाये।

शर्मिष्ठा किसी का कोइ दोष नही ह, मगला। मैं न ही रोक दिया था।

मगला ऐसा क्या, देवी ? स-ध्याकाल मे दीपक न जलाना अशुभ माना गया है।

शर्मिष्ठा शुभ अशुभ तो मन के भ्रम हैं।

मगला ऐसा न कहें। राजमहल मे ही अँधेरा हो तो प्रजा को प्रकाश की प्रेरणा कैसे होगी, देवी ?

शर्मिष्ठा अन्त पुर का उजाला मन के अँधेर का तो नही मिटा सकता न ?

मगला दैव सब शुभ करेगा। चन्द्रवश का पुण्य इतना क्षीण नही हो गया ह।

शर्मिष्ठा पुण्य क्षीण न हो तो शुक्र कुपित ही क्या होते।

मगला लेकिन उन्होंने तो शाप लौटा लिया ह न ?

शर्मिष्ठा भोली हो तुम। एक की लौ से दूसरा दीपक तो कोई भी जला देगा किन्तु

मगला किन्तु क्या, देवी ?

शर्मिष्ठा अपना दीपक बुझाकर उसका तल दूसरे दीपक म कौन डाल देगा, मगला ?

मगला दासी समझी नही।

शर्मिष्ठा चक्रवर्ती के बल-पौरुष का दीप तभी जल सकेगा, जब कोई अपना यौवन उन्हे देकर उनका बुढ़ापा स्वेच्छा से ले ले।

मगला तभी तो हताश होने की कोई बात नही है, देवी।

शर्मिष्ठा नही, मगला। इतना सरल होता यह मत्र तो शुक्राचार्य ने यह छूट नही दी होती।

मगला तो क्या

शर्मिष्ठा हाँ। शुक्राचार्य असुरो के गुरु है। प्रतिशोध की आग अपने शिष्यो से कम नही है उनमें।

मगला तब उदारता का यह ढोग क्या ?

शर्मिष्ठा ताकि असुर सतुष्ट रहे। यह शाप असुरो के दामाद को दिया है उन्होने। अब वे कह सकेंगे कि अपना शाप लौटा लिया है उन्होने तो। ओह यह शाप शुक्र ने मुझे क्यो नही दे दिया ?

मगला आप

शर्मिष्ठा मेरे ही कारण तो चक्रवर्ती को यह दिन देखना पडा। चक्रवर्ती पौरुष का यह पराभव यह अपमान तुझे धिक्कार है, शर्मिष्ठे! ओह मुझ पापिन ने अपने सुख के लिए अकल्क चक्रवर्ती के यश और प्रताप को धूल में मिला दिया।

मगला अपने को सँभाले देवी।

शर्मिष्ठा सँभालने का रह ही क्या गया है अब ?

मगला आपने ही धैर्य खो दिया तो चक्रवर्ती कैसे सँभलेंगे देवी ?

शर्मिष्ठा उन्हे कोई नही सँभाल सकेगा, मगला।

मगला ऐसा न कहे देवी।

शर्मिष्ठा तुम नही समझती। चक्रवर्ती पौरुष के पुजारी हैं। वे जीवन के पूर्ण उपभोग मे विश्वास करते हैं। उस इन्द्रोपम पौरुष को इस

अचानक ययाति का प्रवेश।

ययाति ययाति का पौरुष आज भी इन्द्रोपम ही है, शर्मिष्ठे।

शर्मिष्ठा मगला (आश्चर्य एव सम्भ्रमपूर्वक) चक्रवर्ती!

ययाति आश्चर्य हो रहा है न तुम्हे ?

शर्मिष्ठा आश्चर्य तो है, देव अपने सौभाग्य पर!

ययाति म ने कहा था तुम्हे। ययाति के लिए यौवन ता क्या, प्राणो
त्याग करने वाला का भी अभाव नही होगा। मगला !

मगला आज्ञा, देव।

ययाति मगला, इस अन्त पुर को हमारे हृदय की भाति जगमगा दो, हमारे सपनो की तरह सजा दो अपनी स्वामिनी को। यह रात्रि हमारे मुक्त प्रेम की प्रथम रात्रि होगी।

शर्मिष्ठा लेकिन

ययाति तुम नही समझोगी, शर्मिष्ठे। देवयानी के रहते हम कभी मुक्त मन से नही मिल पाये। किसी अपशकुन-सी घेरे रहती थी उस की छाया। अब न उस का भय है, न उस के पिता का। जाओ, मगला। देखो कोई कमी न रहे। हमारे मिलन की एक और प्रथम रात्रि है यह।

मगला जो आज्ञा, देव।

मगला जाती है। ययाति शर्मिष्ठा की ओर बढता है। उसके कानों कन्धों पर हाथ रखता है। शर्मिष्ठा कुछ सकोच मे है।

ययाति क्या बात है, शर्मिष्ठे ? सकोच क्या ?

शर्मिष्ठा जाने कैसा लग रहा है, आर्य।

ययाति कैसा ?

शर्मिष्ठा मेरे कारण कितना सहा आपने देवयानी का ताप शुक्रा-चार्य का शाप मुझ-सरीखी एक साधारण स्त्री के कारण चक्रवर्ती का अपमान ओह मैं क्या चली आयी उस दिन आपके पास।

ययाति नही तो मैं कैसे जानता कि प्रेम क्या होता है ?

शर्मिष्ठा देवयानी

ययाति नाम न लो उस का।

शर्मिष्ठा दो पुत्र दिये हैं उसने आप को।

ययाति हाँ। किन्तु देवयानी कभी एकान्त मेरी नही हो सकी।

शर्मिष्ठा क्या क्या कह रहे हैं आप ?

ययाति यही तो सत्य है। उस की देह मेरी थी, पर चेतना कच के रग मे रगी थी। एक पल के लिए भी उसे नही भुला सकी वह। (कुछ पलों की चुप्पी) जानती हो प्रेम के घन क्षणो मे कभी उस ने आँख भर देखा भी नहीं मुझे। मैं समझता था

कि वह मेरे प्रेम म सुध गा देती ह लेकिन वह इस देह म किसी और का खोजती रहो। चक्रवर्ती ययाति की देह मे भिक्षु कच था !

शर्मिष्ठा नहीं, देव। भ्रम भी हो सकता है यह आप का।

ययाति नही। ययाति बच्चा नहीं है। सोमरस पीकर मेरी देह से बेसुध लिपटे कच का नाम

शर्मिष्ठा नहीं आर्य

ययाति हा, शर्मिष्ठे। इसीलिए मैं स्वय को अपराधी नही मानता। मैंने कोई विश्वासघात नहीं किया किसी से। *(ठहरकर)* अन्यथा क्या अपने ही पति को कोई स्त्री इतना भयकर शाप दिलवा सकती है ?

शर्मिष्ठा आह कितनी दारुण वेदना सहते रहे आप मुझे भी नहीं बतलाया कभी !

ययाति तुम्ही ने तो प्रेम का अनुभव दिया मुझे। नही तो क्या शुक्राचार्य के क्रोध की उपेक्षा कर तुम्हारे पास आना सम्भव होता !

शर्मिष्ठा ओ ! सहन नही कर पा रही हूँ मै !

ययाति अब उस अतीत को भूल जाओ, शर्मिष्ठे। देवयानी मेरे जीवन का अँधेरा थी। इस स्वर्णिम प्रकाश मे उन स्मृतियो की कालिमा क्या घोलें ? *(अचानक जैसे तेज हवा से दीपक बुझ जाते है।)* अरे, यह आँधी कैसी ? मगला मगला ! *(मगला आती है।)* वातायन बन्द कर दीपक जला दो। *(वातायन बन्द करने और दीपक जलाने का अभिनय करती है। धीरे धीरे प्रकाश हो जाता है।)* तुम इतनी घबराई-सी क्यो हो मगला ?

मगला वह बाहर

ययाति आह हाँ हा मैं तो अपने उत्साह म भूल ही गया था, शर्मिष्ठे।

शर्मिष्ठा क्या देव ?

ययाति मगला उन्ह भीतर लाओ। *(मगला जाती है। कुछ ठहरकर)* शर्मिष्ठे तुम्हारी कोख ने आज चन्द्रवश को धन्य कर दिया है।

शर्मिष्ठा मेरी कोख ने ?

ययाति तुम्हारे पुत्र ने अपने अद्भुत त्याग से जो यश अर्जित किया है

वृद्ध वेश में यशस्वी पुरु का प्रवेश। मगला उसे सँभाले है।

शर्मिष्ठा पुरु नहीं तुम महाराज पुरु यह नहीं

ययाति हाँ, शर्मिष्ठा। ऐसी पितृभक्त सन्तान त्रिकाल में नहीं होगी। हमने पुरु को ही अपना उत्तराधिकारी घोषित किया है।

शर्मिष्ठा लेकिन पुरु पुरु ही क्या इतनी प्रजा अनुचर आह मैं जानती थी मैं ने कहा था

ययाति क्या? क्या कहा था तुम ने?

शर्मिष्ठा मैं ने कहा था मगला से शुक्राचार्य असुरों के गुरु हैं। वे क्षमा नहीं करते।

ययाति लेकिन चिन्ता क्या है, शर्मिष्ठे? यह यौवन तो इसी का है। समय आने पर लौटा देंगे इसे।

शर्मिष्ठा कुछ समझ में नहीं आ रहा। यह इतना बड़ा त्याग

ययाति अचानक कुपित होता है।

ययाति तुम्हारे पुत्र का यौवन लेकर कुछ अपराध कर दिया हम ने?

शर्मिष्ठा पुत्र आप का है, चक्रवर्ती। मेरी तो केवल कोख है।

ययाति तुम्हें गर्व नहीं पुरु पर?

शर्मिष्ठा इससे बड़ा गर्व किसी ने जाना नहीं होगा। लेकिन इतनी वेदना भी क्या किसी ने जानी होगी? *(अचानक जैसे सँभलकर)* मगला, युवराज को आराम से पलंग पर लिटा दो। चक्रवर्ती, आज से पुरु यहीं रहे मेरे महल में।

ययाति जैसा तुम चाहो लेकिन वैसे

शर्मिष्ठा मगला! प्रासाद के पिछले हिस्से को युवराज के लिए सजा दो। *(मगला जाती है)* आप भी अब विश्राम करें, आर्य। मैं कुछ समय पुरु के पास हूँ।

ययाति हाँ हाँ, क्या नहीं। पुरु की सारी देख भाल अब तुम्हें ही करनी होगी। वृद्धावस्था भी एक प्रकार का बचपन ही तो है।

ययाति जाता है। शर्मिष्ठा धीरे धीरे पुरु के पास जाती है। पुरु उठने की कोशिश करता है। शर्मिष्ठा उसे सहारा देकर उठाती है और पलंग के सिरहाने बिठा देती है। गौर से उसकी ओर देखती है।

शर्मिष्ठा तुम्हें मेरे दूध की सौगन्ध है, पुरु। सच कहो, इतने लोगों के होते तुम्हीं ने यह त्याग क्यों किया ?

पुरु कोई तैयार नहीं था, माँ। प्रजाजन अनुचर मंत्री। यहाँ तक कि सब भाई यदु अनु । मैं ही बचा था। पिताजी की वेदना मुझ से देखी नहीं गयी।

शर्मिष्ठा ओह पुरु, मेरे बेटे हमारे सुख के लिए

पुरु नहीं, मां। अपनी ऋणमुक्ति के लिए।

शर्मिष्ठा उस की ओर देखती रहती है। मंच पर धीरे धीरे अँधेरा हो जाता है।

दूसरा प्रवेश

शर्मिष्ठा का शयन कक्ष। पलंग पर उदास सी अधलेटी है। अचानक ययाति का प्रवेश।

ययाति शर्मिष्ठे! प्रिय!

शर्मिष्ठा हड़बड़ाकर उठने का उपक्रम करती है।

शर्मिष्ठा आप चक्रवर्ती लेकिन आप तो

ययाति लेटी रहो। ऐसे ही लेटी रहो। हाँ, बस ऐसे ही

शर्मिष्ठा को पहले की ही तरह तकिये के सहारे बिठाकर पलंग के पास घुटनों के बल बैठता हुआ उसके पाँव चूम लेता है।

शर्मिष्ठा यह क्या कर रहे हैं आप?

कहती हुई दूसरी ओर से पलंग से उतर जाती है।

ययाति लेटी रहो न!

शर्मिष्ठा लेकिन आप तो आखेट यात्रा पर

ययाति रह न सका तुम्हारे बिना। और उस मृग को देखकर तो

शर्मिष्ठा मृग को

ययाति हाँ! अपनी मृगी के संग रमण कर रहा था।

शर्मिष्ठा तो?

ययाति मृगी बिद्ध हो गयी मेरे बाण से आह मृग का वह विलाप मैं तुम्हारे लिए व्याकुल हो उठा।

शर्मिष्ठा मृग के विलाप से मेरा स्मरण

ययाति हाँ, मृगी के लिए था न वह। आह, शर्मिष्ठे!

शर्मिष्ठा की ओर बढ़ता है।

शर्मिष्ठा आप विश्राम कर लें। मैं जलपान की व्यवस्था करती हूँ।

ययाति — नहीं। तुम यहीं रहो मेरे पास और मुझे अपने में डूब जाने दो।

उसे पहले अपने आलिंगन में ले लेता है। शर्मिष्ठा होले से किंतु दृढ़तापूर्वक अपने को उससे अलग कर मुँह फेर खड़ी हो जाती है। ययाति कुछ पल उसकी ओर देखता है।

ययाति — यह तुम्हें क्या होता जा रहा है, शर्मिष्ठे!

शर्मिष्ठा — कुछ भी तो नहीं, आर्य।

ययाति — नहीं कुछ तो है। तुम कुछ छुपा रही हो हम से।

शर्मिष्ठा — आप से छुपाने को हो ही क्या सकता है मेरे पास?

ययाति — तो ... तो ऐसा क्या है।

शर्मिष्ठा — वैसे ही ... मन कुछ उदास-सा है अभी।

ययाति — मैं अभी की बात नहीं कर रहा।

शर्मिष्ठा — तो?

ययाति — तुम जैसे वही शर्मिष्ठा नहीं हो, बल्कि कभी-कभी तो अपरिचित-सी लगने लग जाती हो। क्या ... ऐसा क्या है?

शर्मिष्ठा — मैं क्या कह सकती हूँ, देव!

ययाति — अब यही तो। पहले कभी तुम नहीं बाँटी तुम हम से।

शर्मिष्ठा — मुझे तो नहीं लगता कुछ।

ययाति — तो मुझे ही क्यों लगता है?

शर्मिष्ठा — मेरा दुर्भाग्य! (कुछ देर मौन।)

ययाति — तुम्हें पुरु का बहुत दुख है?

शर्मिष्ठा — नहीं देव। उसने मेरे मातृत्व का गौरव किया है। कितने हैं ऐसे जो अपने पिता के सुख के लिए ऐसा त्याग कर सकें।

ययाति — केवल पिता का सुख ... माता का नहीं?

शर्मिष्ठा — आप का सुख ही तो मेरा सुख है।

ययाति — तब मेरे प्रति यह उदासीनता क्यों?

शर्मिष्ठा — यह आरोप है, आर्य।

ययाति — नहीं, यह मेरे अंतर की वेदना है। कई दिन से तुम्हारे सामने प्रकट करना चाहता था—पर साहस नहीं जुटा पाया।

शर्मिष्ठा — चक्रवर्ती और साहस नहीं जुटा पाये!

ययाति — हाँ, शर्मिष्ठे। समस्त जम्बूद्वीप का चक्रवर्ती सम्राट ययाति तुम से विजित है ... आश्रित है तुम्हारा। मुझे अपने में छुपा लो, शर्मिष्ठे।

शर्मिष्ठा चक्रवर्ती !

ययाति कहने दो मुझे। देवयानी से भागकर तुम्हारे प्यार के आश्रय मे ही आता था मैं। उसकी ईर्ष्या निरंतर डराती रहती थी मुझे उस के पिता का क्रोध अस्तित्व का कँपा देता था फिर भी

शर्मिष्ठा नहीं—उस सब का स्मरण नहीं करायें, देव।

ययाति फिर भी फिर भी तुम्हारा आलिंगन ही मेरा एकमात्र आश्रय था। तुम्हारी मुस्कान म उषाकाल की स्फूर्ति थी' और अब (*शर्मिष्ठा की ओर देखता है। वह नीचे की ओर देखने लगती है।*) तुम्हारे प्यार की वह उद्दामता कहा गयी, शर्मिष्ठे? तुम्हारे अंगों को एक कुंठा-सी घेर रहती ह जैसे। लगता है जैसे जैसे तुम वह शर्मिष्ठा हो ही नही।

शर्मिष्ठा चक्रवर्ती भूल रहे ह कि व स्वय वही नही रह ह।

ययाति मैं? नही।

शर्मिष्ठा मैं सत्य कहती हूँ।

ययाति किंतु उस की झिझक तुम म क्या? तुम्हारे प्रेम म वह उद्दामता क्या नही जो मुझे आलोडित कर देती थी? अब तो देवयानी की छाया से भी मुक्त ह हमारा प्यार।

शर्मिष्ठा यदि ऐसा हो पाता!

ययाति क्या कहती हो?

शर्मिष्ठा हमारा जीवन उस छाया से कभी मुक्त नही हो सकता।

ययाति नही। अब कहा ह वह काली छाया?

शर्मिष्ठा है—मुझ पर आप पर और

ययाति और पुरु पर भी। यही न?

शर्मिष्ठा हाँ। पुरु पर भी।

ययाति नही, शर्मिष्ठा। वह चिन्ता छोड दो तुम। अब हम देवयानी से पूर्णतया मुक्त ह। पुरु का यौवन उधार है हम पर। एक दिन उसे मिलेगा ही साथ ही यह चक्रवर्ती राज्य भी।

शर्मिष्ठा यह चिन्ता नहीं है मेरी।

ययाति तो फिर क्या बात है? क्यों पहले सी लिपट नही जाती तुम जब मैं तुम्हे छूता हूँ? पहाडी नदी-सी आकुल देह काष्ठ-सी जड क्या हो जाती है? बोलो!

शर्मिष्ठा कुछ कठोर भी होती है।

शर्मिष्ठा वह दूँ तो सुन सकेंगे आप ?

ययाति हाँ, हाँ, कहो बोलो।

शर्मिष्ठा नहीं। आप नहीं सुन सकेंगे। सहन नहीं होगा आप से।

ययाति तुम्हारी उपेक्षा से अधिक असहनीय क्या हो सकता है मेरे लिए ? बोलो।

शर्मिष्ठा आप जब मुझे तो लगता है जैसे जैसे मैं

(अचानक रुक जाती है।)

ययाति जैसे क्या ? बोलो, शर्मिष्ठा।

शर्मिष्ठा आर्य ! आप एक और विवाह क्यों नहीं कर लेते ?

ययाति शर्मिष्ठा !

शर्मिष्ठा मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी बल्कि मेरा आग्रह है।

ययाति नहीं।

शर्मिष्ठा मैं आपको वह सुख कभी नहीं दे सकूँगी अब।

ययाति लेकिन क्यों ?

शर्मिष्ठा आपके इस नये यौवन के कारण।

ययाति नये यौवन के कारण ?

शर्मिष्ठा हाँ। मेरी ढल रही देह के साथ आपके नये तारुण्य का मेल सम्भव नहीं है। और जब ऐसा सोचती हूँ तो और अधिक अनमनी हो जाती हूँ।

ययाति गौर से उसकी ओर देखता है। अचानक परिचारिका का प्रवेश।

परिचारिका इन्द्रलोक से कोई अतिथि आये हैं, देवी। मिलना चाहते हैं।

ययाति इन्द्रलोक से ? कौन हैं ?

परिचारिका एक स्त्री है, देव। साथ में एक अनुचर है स्यात्।

ययाति यहीं भेज दो उन्हें।

परिचारिका बाहर जाती है। ययाति आश्चर्य से शर्मिष्ठा की ओर देखता है।

ययाति इन्द्रलोक से कौन हो सकता है ? वह भी स्त्री ? समाचार तो है कि वहाँ सब कुशल है।

परिचारिका के साथ विन्दुमती और एक दूत का प्रवेश।

ययाति विन्दुमती, तुम !

विन्दुमती अभिवादन स्वीकार करें, चक्रवर्ती।

ययाति स्वागत है, विन्दुमती। ये महारानी शर्मिष्ठा हैं।

दोनों एक-दूसरे का अभिवादन करती हैं।

ययाति यह साथ में कौन है ?

विन्दुमती रक्षक है। मेरे साथ आया है।

रक्षक अभिवादन करता है।

ययाति देवराज कुशल से तो हैं ? कैसे आना हुआ।

विन्दुमती सिर झुका लेती है।

रक्षक देवराज इन्द्र ने अपनी यह कन्या आप की सेवा में भेजी है, चक्रवर्ती।

ययाति मेरी सेवा में ? क्या ?

रक्षक हाँ, देव। अपने अन्तःपुर में इस कन्या को स्वीकार कर उन्हें कृतार्थ करें।

ययाति विन्दुमती की ओर ध्यानपूर्वक देखता है। उसके यौवन और सौन्दर्य के प्रति मन-ही मन आकर्षण अनुभव करता है। शर्मिष्ठा विन्दुमती के पास जाती है।

ययाति लेकिन अचानक यह क्या ?

रक्षक पिछले युद्ध में आप ने अपने पुत्र पुरु के साथ देवों की जो सहायता की, उस से देवराज कृतज्ञ अनुभव करते हैं। इस मैत्री को दृढ करने के लिए उन्होंने यह प्रस्ताव किया है।

शर्मिष्ठा हमें देवराज का यह प्रस्ताव स्वीकार है। उन्हें हमारा अभिवादन। चन्द्रवंश देवराज की इस मैत्री का सम्मान करता है। आओ, विन्दुमती।

विन्दुमती को आगे बढ़कर गले लगाती है। रक्षक प्रणाम कर मुड़ कर चला जाता है। शर्मिष्ठा विन्दुमती को लेकर धीरे-

धीरे चली जाती है। ययाति विन्दुमती की ओर आकर्षित अनुभव करता है।

ययाति क्या हो गया यह ! और शर्मिष्ठा ने स्वय उसी ने विन्दु को स्वीकार कर लिया। कही मैं भी तो यही नही चाहता था ? रोका क्यो नही मैंने शर्मिष्ठा को ? क्यो विन्दु की ओर खिच गया मैं भी ? उस की देह से वही गन्ध क्यो आती लगती है जो पहली बार शर्मिष्ठा की देह से आती लगी थी। कुछ समय मे नही आ रहा। शर्मिष्ठा के साथ प्रेम के लिए लिया था यह यौवन। लेकिन जान क्या एक विचित्र-सा तनाव बना रहा हम दोनो के बीच। जैसे कोई ग्रन्थि है जा खुल नही पा रही। और अब विन्दु यह आकर्षण जैसे उसका अग-अग बुला रहा है मुझे। पहले भी देखा है उसे—तब तो इस तरह नही लगा कभी। तो अब क्या ? इस नये यौवन के कारण ?

मच पर धीरे धीरे अँधेरा हो जाता है।

अक द्वितीय

पहला प्रवेश

मच पर हलका-सा प्रकाश हाता है। पुरु का कक्ष। पाश्व स वृद्ध पुर शर्मिष्ठा के कन्ध का सहारा लिये आता है। दूसर हाथ म लाठी है। मगला आकर पलग को दुरस्त करती है। पुर बठ जाता है, थका हारा। शर्मिष्ठा अपन ही आँचल से उसका ललाट और चेहरा पोंछती ह। धीरे धीरे मच पर प्रकाश फल जाता है। मगला चली जाती है।

शर्मिष्ठा थक गय हो ता थोडा विश्राम कर ला।

पुरु विश्राम भी वही कर सकता है जो पूण स्वस्थ हा, सबल हो। मेर लिए ता विश्राम भी एक श्रम है, माँ।

शर्मिष्ठा देह बल तो अधम बल है, पुरु। आत्मबल ही वास्तविक बल ह।

पुरु सच, माँ!

प्यार स शर्मिष्ठा की ओर दखता है।

शर्मिष्ठा हाँ, रे। और उस म तुझ से श्रेष्ठ कौन हागा!

यह वाक्य कहत हुए वह पुरु की ओर दखती है। पर उसे अपनी ओर देखता पाकर आँख नहीं मिला पाती। दूसरी ओर दखने लगती है। मगला दोनों को गौर स देखती रहती है।

पुरु लेकिन दहधारी के लिए देह-बल भी अनिवार्य है। काई इतना निवल भी न हो कि पथ्य से उद्यान तक भी स्वय न जा सके। कभी-कभी सोचता हूँ

शर्मिष्ठा गौर स उसकी आर देखती है।

शर्मिष्ठा पुरु ! कोई पश्चाताप तो नहीं तुम्हें ?
पुरु पश्चाताप ?
शर्मिष्ठा हाँ, कि अपना यौवन पिता को देकर
पुरु माँ !
शर्मिष्ठा तो अपनी अशक्यता को लेकर इतना दुःख क्या ?
पुरु अपने लिए कोई दुःख नहीं है, माँ।
शर्मिष्ठा तो स्वर इतना करुण क्यों ? तुम चक्रवर्ती के उत्तराधिकारी हो।

अचानक विन्दुमती का प्रवेश।

विन्दु उत्तराधिकार में यह बुढ़ापा ही तो मिला है इसे।
शर्मिष्ठा विन्दु ! तुम !
पुरु आप ! प्रणाम स्वीकार करें।
विन्दु किस का प्रणाम ? इस बुढ़ापे का जो चक्रवर्ती का है ? मैं इसका प्रणाम कैसे स्वीकार करूँ ? *(अर्थपूर्ण दृष्टि से शर्मिष्ठा की ओर देखती है। शर्मिष्ठा दूसरी ओर नज़र फेर लेती है।)* क्यों, शर्मिष्ठा बहिन ?
शर्मिष्ठा बुढ़ापा चक्रवर्ती का सही, पुरु तो पुत्र ही है।
विन्दु हाँ, इसी बुढ़ापे का पुत्र।
शर्मिष्ठा कैसी बात करती हो ?
विन्दु क्यों ? तुम्हें नहीं लगता ?
शर्मिष्ठा मुझे ? मुझे कैसा पुरु
विन्दु पुरु की ही कह रही हूँ।
शर्मिष्ठा पुत्र ही तो है।
विन्दु हाँ, लेकिन पिता के बुढ़ापे को ढोता हुआ पुत्र।
शर्मिष्ठा इस से क्या ? यह तो स्वेच्छा से लिया है इसने।
विन्दु तभी तो।
शर्मिष्ठा तभी तो क्या ?
विन्दु *तभी तो देखने आयी हूँ कि चक्रवर्ती का बुढ़ापा कैसा है। मैंने* तो यौवन ही देखा है न उन का ? *(मुस्कराती है।)* बुढ़ापा तो तुम्हारे पास है।
शर्मिष्ठा विन्दुमती !
विन्दु कुछ असत्य कह दिया मैंने ?

पुरु आप दोनों ही माँ हैं मेरी।

शर्मिष्ठा हाँ।

पुरु तो विवाद क्या है?

विन्दु यही कि यौवन की माँ कौन है और बुढ़ापे की कौन?

शर्मिष्ठा जाने क्या कह रही हो तुम!

विन्दु वही जो तुम सोचती हो, बहिन।

शर्मिष्ठा मैं? मैं क्या… मैं तो कुछ भी नहीं… *(अचानक विन्दु से आँखें मिलने पर चुप हो जाती है। एक पल रुक कर धीमे धीमे बात पूरी करती है।)* सोचना क्या है अब?

विन्दु सोचना तो चाहिये था चक्रवर्ती को।

पुरु माँ!

विन्दु बहू कह कर पुकारो तो अधिक उचित नहीं होगा?

खिलखिला कर हँसती है।

शर्मिष्ठा विन्दु! क्या हो गया है तुम्हें?

विन्दु मेरा तो स्वभाव है विनोद का। तुम जानती हो।

शर्मिष्ठा लेकिन हर अवसर पर…

विन्दु भूल हुई न? चक्रवर्ती ने कहा भी था…

शर्मिष्ठा चक्रवर्ती ने भेजा है तुम्हें? क्यों?

विन्दु विहार-यात्रा पर जा रहे हैं हम। जाने से पूर्व तुम्हारा आशीर्वाद लेने।

शर्मिष्ठा आशीर्वाद!

विन्दु हाँ, मेरी तो सास के स्थान पर भी तुम्हीं हो न?

पुरु की ओर देखती है।

शर्मिष्ठा तुम… तुम… मैं… *(पुरु की ओर देखती है। उसे अपनी ओर देखता पाकर विन्दु की ओर देखती है। उससे भी आँखें नहीं मिला पाती। तीसरी ओर देखने लगती है।)* तुम भी जाने क्या…

विन्दु मेरा तो स्वभाव ही ऐसा है। अच्छा, अब चलूँ। चक्रवर्ती प्रतीक्षा कर रहे होंगे।

विन्दुमती जाती है। पुरु और शर्मिष्ठा उसे जाते हुए देखते रहते हैं। फिर दोनों एक-दूसरे की ओर देखते हैं। शर्मिष्ठा आँखें झुका लेती है। पुरु उस की ओर देखता रहता है। मंच पर धीरे धीरे अँधेरा हो जाता है।

दूसरा प्रवेश

शर्मिष्ठा का शयन कक्ष। अँधेरा सा। शर्मिष्ठा बैठी है। मंगला का प्रवेश। धीरे धीरे प्रकाश होता है।

मंगला — देवी इधर बैठी हैं। प्रसाधन नहीं करेंगी?

शर्मिष्ठा — रहने दे, मंगला। क्या होगा प्रसाधन का?

मंगला — यह तो अंतःपुर की रीति है। आपको...

शर्मिष्ठा — अंतःपुर! अंतःपुर क्या किसी भवन का नाम है?

मंगला — नहीं, देवी। यह रानी का हृदय है। तभी तो...

शर्मिष्ठा — तभी तो क्या?

मंगला — अंतःपुर में उजाला न हो तो माना जाता है कि... पत्नी

शर्मिष्ठा — पति से नहीं मिलना चाहती। यही न?

मंगला — जी

शर्मिष्ठा — और इसलिए पत्नी को चाहिए कि वह हर रात दीपक जला कर प्रतीक्षा करती रहे। जागती रहे रात की अंतिम घड़ी तक कि न जाने कब पति उस की प्रतीक्षा पर अनुग्रह कर दे?

मंगला — क्यों!

शर्मिष्ठा — हर रात अभिसारिका सी शृंगार कर बैठी रहे वह और भोर तक सेज के पुष्प अनछुए ही कुम्हला जायँ। दीपक किसी की फूँक से नहीं बुझें, उनका तेल भी चुक जाय? यही न? यही है न अंतःपुर की रीति?

मंगला — अपराध क्षमा हो, देवी। एक बात कहूँ।

शर्मिष्ठा — तुम दासी नहीं हो मंगला। मेरी सखी हो।

मंगला — यह मेरा सौभाग्य है। किन्तु चक्रवर्ती का यह विवाह तो

शर्मिष्ठा — मैंने ही करवाया। यही, न? तुम चक्रवर्ती को अच्छी तरह जान नहीं पायी, मंगला।

मंगला — वे तो आज ही मुझसे पूछ रहे थे

शर्मिष्ठा — तू मिली उनसे?

मंगला — भोर में जब पुष्प चुनने गयी तो उद्यान में टहल रहे थे।

शर्मिष्ठा इतने सवेरे नींद टूट गयी उन की ! विदुमती भी होगी साथ न ? वह भी कह रही थी कुछ ?

मंगला नहीं। वे नहीं थीं। अकेले ही थे चक्रवर्ती।

शर्मिष्ठा अकेले !

मंगला मुझे भी आश्चर्य तो हुआ।

शर्मिष्ठा क्या पूछ रहे थे तुम से ? क्या मेरे

मंगला हाँ, आप के लिए ही यह भी कि कि आजकल रात को अन्तःपुर के दीपक क्यों नहीं जलाये जाते ? स्वामिनी आज्ञा देंगी

शर्मिष्ठा नहीं। मेरे कक्ष में आने के लिए उन्हें यदि निमन्त्रण की आवश्यकता है तो

मंगला यह तो रीति है, देवी।

शर्मिष्ठा दिन के समय नहीं आ सकते थे ?

मंगला दिन के समय ?

शर्मिष्ठा हाँ। लेकिन वे नहीं आयेंगे। उन्हें शर्मिष्ठा से नहीं उस की देह से लगाव है।

मंगला देवी !

शर्मिष्ठा सत्य कटु हो पर उसे समझ लेना चाहिए।

मंगला लेकिन वह भी स्वाभाविक है, देवी। आपके पति हैं वे।

शर्मिष्ठा पति लेकिन पौरुषहीन !

मंगला क्या कह रही हैं आप ?

शर्मिष्ठा हाँ, मंगला। वह पौरुष क्या चक्रवर्ती का है ? किस के लिए दीपक जलाऊँ ? किसे आमन्त्रण दूँ ? अपने ही पुत्र के यौवन को कि वह आय और अपनी माँ को भोगे ?

मंगला शर्मिष्ठे ! सखी ?

शर्मिष्ठा मैं वृद्ध और अशक्त चक्रवर्ती की सेज पर जा सकती थी। उसे ही अपना प्राप्य समझ कर सन्तोष कर लेती। लेकिन कोई घोर व्यभिचारिणी भी अपने ही पुत्र की सेज पर नहीं जायेगी।

मंगला तो क्या चक्रवर्ती ?

शर्मिष्ठा नहीं समझते इतना। वे भोग को ही प्रेम मानते हैं। उन का भी क्या दोष ? मैं भी तो ऐसा ही मानती थी। लेकिन अब

मगला क्या, देवी ?

शर्मिष्ठा जब पुनर्युवा चक्रवर्ती ने मुझे मुझे तो लगा जैसे वे बाह वह उद्दामता वह अकुलाहट चक्रवर्ती की नहीं है। कल्पना भी नहीं कर सकोगी तुम उस दारुण वेदना को जब मुझे अचानक लगा कि कि यह तो मेरी ही कोख म पला मेरे ही रक्त मास से पुष्ट हुआ पौरव ह जिसे मैं अपने ही पुत्र के साथ ओह पुरु

मगला शर्मिष्ठे ! सखी ! आह ! इतना दारुण दुख पीती रही चुप चाप। पहाड भी टूट जाये इस बोझ म तो। *(स्तब्धता। मगला अपने को सँभालती है।)* कुछ पल विश्राम कर लें। अपने को स्वस्थ करें, देवी।

शर्मिष्ठा को ले जा कर पलग पर बिठा देती है। अचानक परिचारिका का प्रवेश।

परिचारिका चक्रवर्ती इधर आ रहे है, देवी।

शर्मिष्ठा पलग से उठ खडी होती है।

शर्मिष्ठा क्या ? चक्रवर्ती ! कहाँ ह ? चलो, मैं चलती हूँ।

परिचारिका के साथ बाहर की ओर जाती है। मगला इस बीच सारी सज्जा ठीक करती है। शर्मिष्ठा के साथ ययाति का प्रवेश।

ययाति यह क्या कर रखा है शर्मिष्ठे ?

मगला को देख कर अचानक चुप हो जाता है। मगला अभि वादन करती है। ययाति उस की ओर अभिप्रायपूर्ण दृष्टि से देखता है। वह प्रणाम कर चली जाती है।

शर्मिष्ठा सभी कुछ ठीक तो है, आर्य।
ययाति नहीं, देवी। चन्द्रवश की राजमहिषी का अत पुर इस अँधेर म ?
शर्मिष्ठा दीपक जल तो रहे ह, चक्रवर्ती !
ययाति इतने भी कि ठोकर न लगे चलने हुए।



गोल्डी मल्होत्रा शर्मिष्ठा की भूमिका मे

सपना मल्होत्रा (विन्दुमती) और अरविन्द नन्दा (ययाति)।



गोल्डी मल्होत्रा (शर्मिष्ठा) और कृष्णकुमार वालिया (पुरु)।

गोल्डी मल्होत्रा (शर्मिष्ठा) और अरविन्द नन्दा (ययाति)।

शर्मिष्ठा उजाले का यही तो प्रयोजन है।

ययाति नहीं, इतना ही नहीं। उजाला इसलिए है कि हम उस में उजागर हो सकें। एक दूसरे के सामने अपने को खोल दे सकें। वह प्रकाश एक दूसरे के अन्तर तक पहुँच जाये। (*शर्मिष्ठा सिर झुका लेती है।*) क्या हम जान सकते हैं कि बिन्दुमती से विवाह के पश्चात इस अन्त पुर में दीपमालिका क्यों नहीं सजायी जाती ?

शर्मिष्ठा आप चक्रवर्ती विहार-यात्रा पर थे।

ययाति विहार यात्रा से लौटे पूरा मास बीत गया। छ मास पश्चात लौटे थे हम। महादेवी ने पति से मिलना भी नहीं चाहा ? प्रजाजन क्या सोचते होंगे ? कि सम्राट देवी शर्मिष्ठा की उपेक्षा कर रहे हैं।

शर्मिष्ठा लेकिन

ययाति लेकिन इस में दोष किसका है ? आपके आमन्त्रण के बिना

शर्मिष्ठा अचानक उत्तेजित हो जाती है।

शर्मिष्ठा दिन के समय भी तो आ सकते थे आप ?

ययाति लेकिन रात्रि को नहीं ? क्यों ?

तीखी दृष्टि से ययाति शर्मिष्ठा की ओर देखता है। शर्मिष्ठा उस दृष्टि को सहन नहीं कर पाती। पार्श्व की ओर देखकर जैसे किसी को पुकारना चाहती है।

ययाति हम आप से कुछ पूछ रहे हैं, देवी (*कुछ स्तब्धता*) हमें उत्तर चाहिए।

शर्मिष्ठा बिन्दुमती नववधू है देव। उस का अधिकार अधिक है।

ययाति छ मास की विहार यात्रा के पश्चात कभी-कभी तुम्हारे पास आना जाना उसके अधिकार को आघात नहीं पहुँचाता।

शर्मिष्ठा नहीं देव। यह स्त्रीत्व का अपमान होता।

ययाति तो क्या अन्त पुर में अँधेरा कर आप हमारा सम्मान कर रही हैं ?

शर्मिष्ठा मेरा दुर्भाग्य है कि चक्रवर्ती न

ययाति बीच में ही बात काट देता है।

ययाति — विन्दुमती का स्वीकार कर लिया ?
शर्मिष्ठा — नहीं, स्वामी। अन्यथा न लें। यह मेरा मरण होगा।

कुछ देर चुप।

ययाति — हम तुम्हारे बिना नहीं रह सकते, शर्मिष्ठे।
शर्मिष्ठा — लेकिन विन्दुमती
ययाति — नहीं। शर्मिष्ठा का स्थान कोई नहीं ले सकता। विन्दु ने हमारे यौवन को तुष्ट किया है, लेकिन तुम्हारे बिना कहीं शान्ति नहीं है, शर्मिष्ठे।
शर्मिष्ठा — भोग में शान्ति कहीं नहीं है देव।
ययाति — यह दो आत्माओं का मिलन है, भोग नहीं।

शर्मिष्ठा को अपनी बाहों में लेने का प्रयत्न करता है। शर्मिष्ठा छिटककर दूर खड़ी हो जाती है।

शर्मिष्ठा — नहीं आर्य। मुझे क्षमा करें।
ययाति — शर्मिष्ठा! यह हमारा तिरस्कार है।
शर्मिष्ठा — नहीं, देव! यह मेरा अधिकार है।
ययाति — अधिकार? पति के तिरस्कार का अधिकार?
शर्मिष्ठा — यह आपका तिरस्कार नहीं, मेरी विवशता है, चक्रवर्ती। आप का यौवन आप का पौरुष मैं सहन नहीं कर पाती।

ययाति कुछ पल उस की ओर देखता है।

ययाति — तुम कहीं डाह से जल तो नहीं रही हो, शर्मिष्ठा?
शर्मिष्ठा — डाह? डाह किससे?
ययाति — मुझसे विन्दुमती से। हमें अपनी देह की सीमा स्वीकार करनी चाहिए, शर्मिष्ठा।
शर्मिष्ठा — देह की सीमा! *(व्यंग्य से मुस्कराती है।)* वही तो कर रही हूँ, चक्रवर्ती।

दोनों एक-दूसरे की ओर देखते खड़े रहते हैं। मंच पर धीरे धीरे अँधेरा हो जाता है।

अक तीसरा

पहला प्रवेश

मच पर धीरे धीरे प्रकाश होता है। पलग पर ययाति और विदुमती सोये है। विदुमती उठ कर वातायन खोलने का अभिनय करती है। अँगडाई लेती है। ययाति पलग पर अध-लेटा-सा हो कर यह सब देखता रहता है। विदुमती उस अपनी ओर देखते पाकर मुस्कराती है।

विदु क्या सोच रहे ह ?

ययाति हर प्रभात तुम्हार यौवन का नित-नूतन करता जाता है, विदु ! तुम्हारा सौदय और खिल उठता है। यह यौवन, यह सौ दय कभी न रहगा तव ?

विदु निश्चिन्त रह, चक्रवर्ती ! मैं दवयोनि हूँ। हम चिरयुवा हात है। मत्यलोक के प्राणी निरन्तर बुढ़ाप की ओर वढते ह क्योंकि उन्ह मरना हाता है। हमारा यौवन निरन्तर नित नूतन होता जाता ह—दवत्व के चरम शिखर की ओर। लेकिन आप दवयोनि नही है।

ययाति जानता हूँ। एक दिन मैं फिर वृद्ध हा जाऊँगा। वृद्ध और अशक्त ! और तुम ऐसी ही बनी रहागी चिरयुवा चिरसुदर !

विदु प्रकृति का यही विधान है।

ययाति और और एक दिन मैं नही रहूँगा। तव भी तुम इसी तरह

विदु मुझे तो इद्रलोक लौटना है। मत्यलोक हमारा स्थायी आवास नही हा सकता।

ययाति विवाह को जन्म जन्मान्तरों का सम्बध कहा गया है।

विदुमती खिलखिला कर हँसती ह।

विन्दु मन न भरा हो तो अगले जन्म में फिर लौट आऊँ आप के पास ? तब तक प्रतीक्षा कर लूंगी मैं।
ययाति ठिठोली कर रही हो मेरी ?

विन्दु अचानक गम्भीर हो जाती है।

विन्दु नहीं, चक्रवर्ती ! मेरे जीवन का सत्य यही है। (अचानक स्वर बदलकर) मैं देवयोनि हूँ। एक ही वंश की कई पीढ़ियों से सम्बन्ध रख सकती हूँ।
ययाति यह पाप है।
विन्दु मृत्युलोक में। हम व्यक्ति का नहीं पौरुष का मांगती हैं। पौरुष सनातन तत्त्व है व्यक्ति में उसकी आंशिक अभिव्यक्ति है केवल। प्रत्येक नारी सनातन कामना और पुरुष उसी सनातन पौरुष का माध्यम है।
ययाति कामपणा पाप नहीं है तब ?
विन्दु नहीं। वह सनातन है, धर्म है।

ययाति उठ कर आलिंगन के लिए बाँह फैलाता है।

ययाति आओ, सनातन नारि। लो, मुझे अपने में समेट लो। न छोड़ो मुझे। एक पल के लिए भी नहीं। प्रिये ! विन्दु ! इतनी उद्दामता इतना पौरुष तुम न होतीं तो अब समझा देवराज ने तुम्हें क्यों भेजा मेरे पास। अन्यथा विश्व की समस्त नारियाँ मिलकर भी इस पौरुष का वेग नहीं सह सकती थीं। ओह ! शर्मिष्ठा शायद ठीक कहती थी
विन्दु क्या कहती थी शर्मिष्ठा देवी ? आप उधर गये थे ?
ययाति हाँ, गया था कुछ दिन पूर्व। रहा नहीं गया।
विन्दु क्या कहती थी ?
ययाति कि वह मेरे पौरुष को सहन नहीं कर पायगी।
विन्दु तो उन्होंने आप को स्वीकार नहीं किया ?
ययाति विन्दुमती !
विन्दु व्यंग्य नहीं कर रही, देव। केवल जानना चाहती थी।
ययाति हाँ। मेरा आग्रह उन्हें स्वीकार नहीं हुआ। मैंने तो समझा कि उन्हें ईर्ष्या हो रही है।

विन्दु — ईर्ष्या ?

ययाति — हाँ, मुझ से, तुम स ।

विन्दु — नही, चक्रवर्ती । शर्मिष्ठा देवी इन वृत्तिया से ऊपर है। ययाति देव को उन से अधिक किसी ने प्यार नही किया ।

ययाति — तुम भी एसा समझती हो ?

विन्दु — निस्सन्देह ।

ययाति — तुम ने भी नही !

विन्दु — हम केवल रमण करती है, प्रेम नही ।

ययाति — विन्दु !

विन्दु — कटु सत्य कहने के लिए क्षमा करेंगे, देव ।

ययाति — नही, यह सत्य नही है। तुम विनोद कर रही हो। लेकिन तुम्हारे इस कथन से मुझे कितनी पीडा पहुँची है, जानती हो !

विन्दु — नही, राजन् । आपका पीडा देना मेरा अभीष्ट नही है ।

ययाति — फिर एसा क्या कहती हो ?

विन्दु — क्योकि यही सत्य है ।

ययाति — यह सत्य मेरे हृदय को चीर दगा ।

विन्दु — सत्य सदैव शुभ होता है ।

ययाति — यह सत्य भी ?

विन्दु — हाँ, यह भी । पीडा आपके दृष्टिकोण की ह ।

ययाति — नही, विन्दु । मुझे दशन मे मत उलझाओ । मैं तुम्हारे प्रेम का

विन्दु — क्षमा करें, दव ! आप केवल मर यौवन के, मेरी देह के प्यासे ह । प्रेम देवी शर्मिष्ठा के पास है ।

ययाति — तो वह मुझे स्वीकार क्या नही करती ?

विन्दु — आपने उनसे प्रेम मागा ही कब ? आप ता सदैव देह की ही माँग करत रहे ।

ययाति — मरा अधिकार है यह । मैं उसका पति हूँ ।

विन्दु — अधिकार की भाषा लालसा की होती ह, प्रेम की नही ।

ययाति — लालसा भी हो ता क्या अनुचित है ? वह मरी

विन्दु — पत्नी ह ! यही न ? *(मुस्कराती है ।)*

ययाति — निस्सन्देह । उस की देह मेरी है ।

विन्दु — आप भूलते है, चक्रवर्ती । अपन पुत्र की सेज पर आने की आशा कोई भी माँ मृत्यु का वरण करना पसन्द करगी ।

ययाति मैं शर्मिष्ठा का पति हूँ।

विन्दु लेकिन आप का यह यौवन, यह पौरुष देवी शर्मिष्ठा का पुत्र है।

ययाति विन्दुमती !

विन्दु शुक्राचार्य का शाप लौटा लेना शाप देने से भी भारी पड़ा है, चक्रवर्ती ! सारा भ्रम उलट गया।

ययाति भ्रम ? कैसा भ्रम ?

विन्दु मानवी सृष्टि का भ्रम।

ययाति मैं समझा नहीं।

विन्दु समझ लेते तो इस दुष्चक्र से मुक्त न हो जाते ?

ययाति दुष्चक्र ?

विन्दु विधान यही है कि पुत्र में पिता का ही जन्म होता है। लेकिन आप में पुरु का पुनर्जन्म हुआ है।

ययाति पुरु का पुनर्जन्म ? पहेलियाँ मत बुझाओ। तुम कहना क्या चाहती हो ?

विन्दु यही कि आप के इस पौरुष ने शर्मिष्ठा की देह से जन्म लिया है। शर्मिष्ठा देवी अपने ही पुत्र के पौरुष को भोगना कैसे स्वीकार करती ?

ययाति तुम विक्षिप्त हो गयी हो, विन्दुमती !

विन्दु अनुकूल न हो तो सम्पूर्ण सृष्टि विक्षिप्त लगने लगती है। लोगों ने सूर्य चन्द्र को, ईश्वर तक को विक्षिप्त कहा है।

ययाति मैंने उधार लिया है पुरु का यौवन। अन्य सभी कुछ तो मेरा ही है। यह देह, ये इन्द्रियाँ सब मेरी ही तो हैं।

विन्दु इस देह का बल, इस का लावण्य पुरु का है। अन्यथा इस देह में रखा ही क्या है ?

ययाति किन्तु वह मैं उसे लौटा दूँगा।

विन्दु कब ?

ययाति समय आने पर।

विन्दु तब वह वैसे भी वृद्ध हो रहा होगा। जो यौवन उस ने आप को दिया है, वह अक्षय नहीं है।

ययाति तुम कहना क्या चाहती हो ?

विन्दु अच्छा ! इस बीच यदि उस की प्राणशक्ति चुक जाय तो ?

ययाति किस की ?

विन्दु उस बुढ़ापे की जो वह अपने पर ढो रहा है।
ययाति नहीं!
विन्दु तो वह मृत्यु किस की होगी?
ययाति मृत्यु?
विन्दु ययाति की या पुरु की? *(स्तब्धता)* मौन क्या हो गये, चक्रवर्ती? बतायें, किस की मृत्यु होगी वह?
ययाति कुछ समझ में नहीं आ रहा।
विन्दु क्योंकि आप समझना चाहते नहीं।
ययाति मैं नहीं समझना चाहता?
विन्दु हाँ। यह देह अब पुरु की है।
ययाति नहीं, विन्दु। मैं ययाति ही हूँ। मेरी मुखाकृति, इस देह की गठन—सब ययाति का है।
विन्दु यह सभी परिवर्तनशील है। यह मुखाकृति बालपन में क्या ऐसी ही थी। देह के कोष निरन्तर परिवर्तनशील हैं और
ययाति और क्या? चुप क्या हो गयी!
विन्दु और इस देह में यह परिवर्तन पुरु के यौवन से हो रहा है उस बुढ़ापे से नहीं जो ययाति का है।
ययाति लेकिन मैं ययाति हूँ। इसी नाम से जानते हैं मुझे सब।
विन्दु वह एक नाम है। जब चाहें उस में परिवर्तन कर सकते हैं।
ययाति लेकिन मेरी आत्मा?
विन्दु उसका कोई नाम नहीं होता। वह न पति होती है, न पुत्र। पिछले जन्म में यह आत्मा क्या ययाति कहलाती थी?
ययाति तुम उलझा रही हो!
विन्दु नहीं, सीधी बात है। ययाति किसी आत्मा का नहीं, देह का नाम है, और उस देह का सब कुछ अब पुरु का है। अन्यथा *(अचानक चुप हो जाती है।)*
ययाति अन्यथा क्या!
विन्दु कुछ नहीं।
ययाति नहीं, कुछ मत छुपाओ जब इतना कहा है तो।
विन्दु अन्यथा मुझे भी आपके साथ रहना क्यों स्वीकार होता?
ययाति नहीं, विन्दु! नहीं।
विन्दु *(कुछ चुप रहकर)* सत्य अनुकूल न हो तो कटु लगता है—लेकिन इस से वह असत्य नहीं हो जाता।
ययाति तो मुझे क्यों स्वीकार किया तुम ने? क्या विवशता थी? तुम देवराज की पुत्री थी, अप्सरा नहीं।

विन्दु मैं पुर पर आसक्त थी।
ययाति विन्दुमती।
विन्दु यही सत्य है, चक्रवर्ती।
ययाति ता तो मेरे साथ ?
विन्दु ययाति यह यौवन पुरु का था जिस पर मैं आसक्त थी।
ययाति लेकिन देवराज
विन्दु वे जानते थे मेरी आसक्ति के सम्बन्ध में।
ययाति तो भी उन्होंने मेरे पास भेजा तुम्हें ?
विन्दु भेजा था पुरु के लिए। मैंने ही कहा था उन से। लेकिन
ययाति लेकिन क्या ?
विन्दु तब तक उस का यौवन आप के पास आ गया था।
ययाति मैं पिता हूँ उसका।
विन्दु आपका बुढ़ापा उस के यौवन का पिता है।
ययाति किन्तु तुम पुरु पर आसक्त थी।
विन्दु उस के पौरुष पर तेज पर, यौवन पर। और वह सब उसी देह में था जिसे आप ययाति कह रहे हैं। लेकिन (चुप हो जाती है।)
ययाति लेकिन क्या ?
विन्दु लेकिन पुरु भी तो नहीं मिला इस सब में।
ययाति विन्दु।
विन्दु हाँ, इस पौरुष, इस यौवन, इस तन से भी बाहर रह जाता था कुछ जो मेरी बाँहों में नहीं सिमट पाता था मानो। यह सब पुरु का था—पुरु नहीं था लेकिन।
ययाति मुझ में पुरु का तलाश करती रही तुम।
विन्दु आप में नहीं, इस यौवन में। मैंने समझा था—यही तो है पुरु जिसे मुझे पाना है। मेरा भ्रम था लेकिन। यह सब पुरु का था, पुरु नहीं था लेकिन। उसे नहीं पा सकी मैं। (ययाति देखता रहता है।) समय आ गया है मुझे अब लौट जाना चाहिए। (ययाति चौंकता है।)
ययाति कहाँ।
विन्दु इन्द्रलोक। पर मेरे उदर में जो बीज पल रहा है उसे किस का नाम दूँगी मैं।
ययाति ओह! यह क्या किया तुम ने कैसा जघन्य कृत्य अपने सुख के लिए पुरु की आसक्ति में मेरे साथ

विदु आपने भी क्या इसीलिए नहीं लिया था पुरु का यौवन ?

विदु चली जाती है। ययाति उसे जाते हुए देखता है। फिर सिर झुका कर बैठ जाता है। कुछ पल की चुप्पी। फिर सिर उठाता है।

ययाति यह क्या कर बैठा मैं ? पुरु पर आसक्त थी वह और मेरे साथ' मैं पुरु' शर्मिष्ठा, कितना सहा है तुमने ! मैं ने क्या नहीं समझा यह सब ? लेकिन मैं तो प्रेम चाहता था, निश्छाय प्रेम—वह मेरे भाग्य में नहीं ह स्यात्। कहीं कच, कहीं देवयानी, और अब अपना ही अंश पुरु' कहीं मुक्ति नहीं। सब कुछ ले लो मुझ से। सब कुछ। छोड़ दूंगा मैं यह चक्रवर्तित्व—बस एक पल' निश्छाय, मुक्त प्रेम एक पल'

मंच पर धीरे धीरे अँधेरा हो जाता है।

पलग पर पुरु अधलेटा है। एक कोने में किसी चीज को देख कर उठाने के लिए बिना लाठी उठ कर जाने की कोशिश करता है। हाँफ जाता है। बीच में ही लौट कर पलग की पाटी पर बैठ जाता है। इसी बीच शर्मिष्ठा आती है और दौड़कर उसे सँभालती है। उस के ललाट पर से पसीना पोंछती है।

पुरु इसीलिए कहता हूँ कि दुर्बलता अभिशाप है। कभी कभी सोचता हूँ *(अचानक चुप हो जाता है।)*

शर्मिष्ठा क्या सोचते हो पुरु ?

पुरु यही कि कि यदि शाप लौटाने की विधि न बतायी होती शुक्र ने तो चक्रवर्ती कैसे सहन करते यह सब। वे तो बहुत अधीर हैं

शर्मिष्ठा और आत्मकेंद्रित भी।

पुरु क्या कह रही हो ? नहीं, यह तुम्हें शोभा नहीं देता।

शर्मिष्ठा अपमानित नहीं कर रही उन्हें, पर सत्य यही है।

चुप हो जाती है।

पुरु माँ, मेरी ओर देखो, माँ ! *(शर्मिष्ठा उसकी ओर देखती है।)* एक बात पूछूँ ? सच सच कहोगी न ?

शर्मिष्ठा ऐसी भी क्या बात है ? बोलो।

पुरु कहूँगा। पर उस से पहले तुम्हें शपथ लेनी होगी।

शर्मिष्ठा शपथ कैसी ?

पुरु मेरी शपथ कि तुम कुछ छुपाओगी नहीं।

शर्मिष्ठा ऐसा भी क्या प्रश्न है तेरा ?

पुरु है, माँ ! वह मेरे अस्तित्व का प्रश्न है।

शर्मिष्ठा तुम्हारे अस्तित्व का ? ऐसी क्या बात है ? बोलो।

पुरु शपथ लेती हो न ?

शर्मिष्ठा हाँ, हाँ। कुछ बोलो तो सही अब।
पुरु चक्रवर्ती से अलग क्या रहने लगी तुम ?
शर्मिष्ठा यह तुम्हारे अस्तित्व का प्रश्न कैसे हो गया पुरु ? यह प्रश्न क्या तुम्हें पूछना चाहिए ?
पुरु मेरी दृष्टि में यह मेरे अस्तित्व का ही प्रश्न है।
शर्मिष्ठा कैसे ? यह प्रश्न तुम्हारी मर्यादा के बाहर है। मैं इसका उत्तर देने को बाध्य नहीं हूँ।
पुरु मुझ पर विश्वास नहीं है, मां ?
शर्मिष्ठा बात विश्वास अविश्वास की नहीं, मर्यादा की है।
पुरु वही तो मैं कह रहा हूँ। तुम क्या मुझसे मर्यादाहीन आचरण की अपेक्षा कर सकती हो ?
शर्मिष्ठा इसीलिए मुझे आश्चर्य है, पुरु। यह बात तुम्हारे मन में उठी ही क्या ?
पुरु मेरा प्रश्न निरूपण ठीक नहीं रहा, माँ। मेरा मन्तव्य था कि
शर्मिष्ठा नहीं। हम दोनों के बीच झाँकने की तुम्हारी इच्छा अनुचित है।
पुरु दोष न लगाओ, माँ। मेरा प्रश्न केवल मुझसे सम्बन्धित था।
शर्मिष्ठा तुम्हारा इससे क्या सम्बन्ध ?
पुरु वही तो जानना चाहता था मैं। कहीं इसका कारण यह तो नहीं कि (चुप हो जाता है।)
शर्मिष्ठा क्या ?
पुरु सम्भव है तुम्हें चक्रवर्ती की यह बात सहन न हुई हो—
शर्मिष्ठा कौन-सी बात ? विदुमती ?
पुरु नहीं।
शर्मिष्ठा तो ?
पुरु कि उन्होंने जिसका यौवन लिया वह तुम्हारा ही पुत्र है।
शर्मिष्ठा पुरु !
पुरु तुमने मेरी शपथ ली है, मां।
शर्मिष्ठा मैंने कहा था न चक्रवर्ती आत्मकेन्द्रित है।
पुरु वह तो तुम पहले भी जानती थीं। लेकिन अब तुम उन्हें सहन नहीं कर सकीं न ? मेरा यौवन लेने के

शर्मिष्ठा अचानक उत्तेजित हो जाती है।

शर्मिष्ठा — कोई माँ नहीं सह सकती यह।

पुरु बीच में ही बात काटता हुआ लाठी का सहारा ले कर पलंग से उठ खड़ा होता है।

पुरु — कोई पुत्र भी सहन नहीं कर सकता यह!

शर्मिष्ठा — निस्संदेह!

पुरु — तो मुझे मगध के प्रवास छोड़ दो, माँ। अब से तुम मेरी परिचर्या नहीं करोगी।

शर्मिष्ठा — क्या? इस अभागिन माँ को यह दंड क्यों, पुरु?

पुरु — अभागा वह पुत्र है जो माँ से परिचर्या करवाता है।

शर्मिष्ठा — लेकिन पुत्र यदि दुर्बल हो

पुरु — वृद्ध हो?

शर्मिष्ठा — तभी तो।

पुरु — और वह बुढ़ापा अपने ही पति का हो!

शर्मिष्ठा — पुरु!

पुरु — क्षमा करो, माँ। जो भी हूँ तुम्हारा पुत्र ही रहूँगा।

शर्मिष्ठा — मैं ने कब

पुरु — तुम्हारी परिचर्या में वात्सल्य नहीं है, माँ। एक लगाव है जो असहाय और वृद्ध पति के लिए होता है। तुम्हें लगता है कि यह बुढ़ापा चक्रवर्ती का है इसलिए तुम्हें इसकी सेवा करनी चाहिए। नहीं माँ तुम्हें चक्रवर्ती के साथ होना चाहिए।

ययाति का प्रवेश।

ययाति — इसीलिए तो ययाति आया है यहाँ।

सब आश्चर्यचकित हो जाते हैं। अंततः शर्मिष्ठा मौन भंग करती है।

शर्मिष्ठा — चक्रवर्ती! आप यहाँ!

ययाति — हाँ शर्मिष्ठे! *(ययाति का स्वर अत्यंत कोमल है।)*

शर्मिष्ठा — लेकिन आप तो यात्रा पर जाने वाले थे? विंदुमती

ययाति — चली गई अपनी यात्रा पर। हमारी यात्रा तुम्हारे साथ होगी।

शर्मिष्ठा — मेरे साथ!

ययाति — क्यों? हम तुम्हारे सहयात्री होने के योग्य नहीं?

शर्मिष्ठा — क्या कहते हैं, देव? लेकिन यहाँ पुरु

पुरु बीच म ही बात काट देता है।

पुरु — पुरु की देख-भाल मगला कर लेगी। तुम्ह चक्रवर्ती के साथ जाना चाहिए, मा।

ययाति — पुरु को तो स्वय सारे राज्य की देख-माल करनी है।

पुरु — मुझे ? लेकिन

ययाति — हाँ, पुरु ! हमे इस ऋण से भी मुक्त करदो अब।

पुरु — लकिन, चक्रवर्ती

ययाति — अब हम नही, तुम चक्रवर्ती हो।

पुरु — नही। मुझ से नही हो सकेगा यह।

ययाति — यह राजाज्ञा है, पुरु ! पिता का आदेश भी।

शर्मिष्ठा — पुरु ठीक कहता है, आय ! ऐसी अवस्था मे

ययाति — यह अवस्था ता हमारी है, शर्मिष्ठा ! हम अपना बुढापा लने आये हैं—पुरु को उसका यौवन लौटा दने।

सब कुछ देर चुप रह जाते हैं।

शर्मिष्ठा — अकस्मात् यह

ययाति — बहुत सोच विचार कर निणय लिया है यह।

पुरु — किन्तु इतनी त्वरा क्या ? अभी तो एक वष भी नही हुआ।

ययाति — अपनी नियति से पलायन कायरता है। ययाति जो कुछ हो, कायर नही है। यह बुढापा मेरी नियति है तो म ही इसे वहन भी करूँगा।

पुरु अचानक मुह फर कर चिल्लाता है।

पुरु — नही, यह नही होगा अब ? यह यौवन चक्रवर्ती ही रखें। मैं बुढापे से सन्तुष्ट हूँ।

ययाति — लेकिन क्यो ?

पुरु — मैंने अपना यौवन देकर यह बुढापा लिया है। इस मैं नही लौटाऊँगा।

शर्मिष्ठा — पुरु !

ययाति — बुढाप से इतनी आसक्ति ?

शर्मिष्ठा — बोलो, पुत्र !

पुरु चुप रहता है

ययाति — ऐसी भी क्या विवशता है तुम्हारी ?

पुरु मैं म मांग नहीं मानूगा उस यौवन का। वह मेरे लिए नहीं है अब !

ययाति किस के लिए है ?

पुरु आपके लिए।

शर्मिष्ठा अपने को सँभालो पुरु ! तुम चक्रवर्ती के सामने खड़े हो।

ययाति नहीं, यह रोष नहीं है उसका। उसका रोष स्वाभाविक है।

पुरु यह रोष नहीं है, चक्रवर्ती ! मेरी विवशता है।

शर्मिष्ठा विवशता कैसी ?

ययाति वही तो जानना चाहते हैं हम।

पुरु क्या ? क्या जानना चाहते हैं आप ? मेरा यौवन आप का है। मुझे नहीं लेना है उसे। यह क्या पर्याप्त नहीं है ?

ययाति अपने पुत्र पर इतना भी अधिकार नहीं हम ?

पुरु पुत्र की हर बात क्या पिता को जाननी ही चाहिए ?

ययाति यह तुम्हारी निजी बात नहीं है। इस से हमारा सम्बन्ध है। हमारी भी नियति जुड़ी है इस से।

पुरु चक्रवर्ती !

ययाति यह चक्रवर्ती ययाति नहीं, तुम्हारा पिता कह रहा है। उसे अपना बुढ़ापा क्या नहीं मिल सकता ?

पुरु पुत्र के यौवन से विनिमय जो हो गया है उसका।

ययाति लेकिन हम उस यौवन को सहर्ष लौटा देना चाहते हैं।

पुरु आप भूल रहे हैं कि यह यौवन अब वही नहीं है।

ययाति क्या ?

पुरु आप ने भोगा है इसे मेरे लिए त्याज्य है यह।

ययाति पुरु ?

पुरु कोई पुत्र उस यौवन को स्वीकार नहीं कर सकेगा जिस में उसकी मां का

शर्मिष्ठा मर्यादा में रहो, पुरु।

पुरु वही तो कर रहा हूँ मां। मर्यादा की ही तो बात है।

ययाति यह यौवन तुम्हारा ही है पुरु। मुझ पर तो ऋण था।

पुरु यौवन कोई वस्तु नहीं है चक्रवर्ती ! वह एक अनुभव है। मेरे लिए अब वह अनुभव एक स्मृति होगा—एक असहनीय स्मृति। मेरी चेतना इस बोझ को नहीं झेल पायेगी—टूट जायगी।

कुछ पलों का मौन।

ययाति हम तुम से सहानुभूति है, पुरु। लेकिन हर किसी को अपनी नियति से स्वय ही साक्षात्कार करना होता है। मैं उस से आतंकित जितना भागता रहा, वह काल छाया सी मुझे ग्रसती ही गयी। अब उस के समक्ष खडा हो गया हूँ तो लगता है मुक्त हो गया हूँ—निश्छाय।

पुरु लेकिन मैं

ययाति तुम्हारी वेदना को समझ सकता हूँ। लेकिन उस से भागो मत, उस से साक्षात्कार करो। उसी म मुक्ति है।

पुरु किन्तु

ययाति जानता हूँ, यह नियति मेरे कारण है। लेकिन मैं पिता हूँ, इतिहास हूँ तुम्हारा। तुम ने इतिहास के दायित्व को सँभाला है तो उस के परिणामो से कैसे बचोगे?

पुरु नही, चक्रवर्ती!

ययाति निर्णय यही हुआ था, पुरु, कि मैं जब चाहूँ तुम्हारा यौवन लौटा सकता हू। यह लो, मैं तुम्हारा यौवन लौटाता हूँ।

अपना मुकुट उतार कर पुरु के मस्तक पर रख देता है।

पुरु नही, नही तात! मुझ से नही होगा आह अनन्त सन्ताप के इस नरक मे

धीरे-धीरे पुरु युवावस्था म आता दीखता है। लेकिन उस के चेहरे पर पीडा का भाव बहुत स्पष्ट है। ययाति वृद्ध होता जा रहा है। पुरु के हाथ से लाठी लेता है। शर्मिष्ठा आगे बढ कर उसे सहारा देती है। दृश्य निश्चल हो जाता है। मच पर अँधेरा हो जाता है।

●

किमिदम् यक्षम्

किमिदम यक्षम का प्रथम मचन रगन नाटयदल द्वारा 13 सितम्बर'85 को बीकानेर म हुआ।

निर्देशन कलाश भारद्वाज

पात्र

धाय	रूपा पारीक
प्रोफेसर	राकेश मूथा
माँ युवती व गूगी-बहरी लडकी	नीलम शर्मा
अधी लडकी	शीलम शर्मा
नवागतुक	शरद सक्सेना
युवक	सतीश शर्मा
मूर्तिकार	प्रह्लाद राय
लडका	निधिर फबियन टिक्का

एक जटिल नाट्यानुभव

फ्रिमिदम यक्षम का वाचन जब नन्दकिशोर जी ने पहली बार रंगमंच के सभी मित्रों के सम्मुख किया तो नाटक के गहरे अर्थों के अधिक स्पष्ट न होने के बावजूद एक जटिल संरचना का अनुभव वाचन के दौरान बार-बार होता रहा। वाचन के दौरान कुछ दृश्य जैसे खिंचते गये—धाय का लगातार देखते रहना, गूँगी-बहरी लड़की का दर्द भरा चेहरा, खण्डहर में प्रोफेसर की मानो अपने को ही खोजती बेचैन आँखें—कुछ धुँधला, कुछ स्पष्ट झिलमिलाता गया—एक दूजे में घुला मिला। वाचन समाप्त हुआ—बची रहीं ये सब तस्वीरें और एक बेचैनी। नाटक को फिर फिर पढ़ा—साथियों के संग और अलग में भी—और मंचन करने की बेचैनी बढ़ती गयी।

लेकिन धाय? इस जटिल चरित्र को निभाने के लिए अभिनेत्री की तलाश शुरू हुई तो लगा कि यह नाटक हम से नहीं हो सकेगा—बीकानेर में कोई अभिनेत्री नहीं दिखी जो इस भूमिका के साथ न्याय कर पाती। फिर भी एक जिद कि पहली प्रस्तुति रंगमंच ही करेगा और नाटककार भी इस जिद के आगे लाचार। सारे प्रयत्नों के बावजूद नाटक एक अर्से तक पड़ा रहा। एक दिन अचानक रूपा पारीक से बात हुई, उसने नाटक पढ़ा। फिर सब के साथ बैठकर वाचन हुआ। लगा कि हो सकता है।

पहली बार नाटक जब सुना तब साथ ही-साथ एक बड़े मंच पर उसे होते हुए भी देख रहा था। रेलवे प्रेक्षागृह ही इस आवश्यकता की कुछ पूर्ति कर सकता था। उसी को ध्यान में रखकर मंचन की तैयारी की गयी। मंच को तीन भागों में बाँटा। दर्शकों की दृष्टि से बायें खण्डहर, मध्य और दाहिनी ओर घर का भाग। तीनों भागों पर प्लेटफार्म का उपयोग कर अलग अलग स्तर बनाये गये। मंच पर न्यूनतम वस्तुओं का उपयोग किया गया ताकि एक सूनेपन और रहस्यमयता का वातावरण बराबर बना रहे।

वाचन और पूर्वाभ्यास चलता रहा। नाटक की जटिल संरचना अधिकाधिक चुनौतीपूर्ण होती गयी। अर्थ के कई स्तर एक साथ झिलमिलाने लगे—फैंटेसी और यथार्थ एक साथ रूपायित कैसे हो। इस बीच मैंने खुद

को अन्दर से कमजोर होते देगा, लेकिन अभिनेताओं और अन्य सहकर्मियों की लगन से विश्वास का बल मिला।

जानना मनुष्य की मूल प्रवृत्ति है और जानने का सर्वोच्च लक्ष्य है खुद का जानना। लेकिन खुद को जानने के क्या मानी हैं? क्या अपने इतिहास को, अतीत को जानना ही खुद का जानना है? इतिहास है क्या? जानना तो मुक्ति है—पर इतिहास क्या कभी मुक्त करता है? या कि अपने का जानना अपने होने का बोध है और इतिहास वह अभिशाप है जो इस बोध को होने नहीं देता? सिमिटम प्रजम की केन्द्रीय समस्या आखिर क्या है?

बचपन से ही घर से भागा प्रोफेसर (पुरातत्ववेत्ता) इस सवाल को लेकर परेशान है कि उसका इतिहास क्या है? अपने पिता को अपने इतिहास के मूल की खोज जारी रखने के लिए ही वह बीस साल बाद घर लौट आता है। घर आने पर माँ की जगह धाय है। वह मान, कुछ बताती ही नहीं—रहस्यमयी-सी धाय जो लगातार देखती आ रही है—शायद देखती रहेगी भी। इस रहस्य को और गहरा और तकलीफदेह बनाती है गूंगी-बहरी लड़की। 'यह तुम्हारी बहिन है', धाय कहती है। परेशान प्रोफेसर चारपाई पर बैठ जाता है ये शब्द सुन कर। बचपन में मा से किया प्रश्न कौंध जाता है—मेरे पिता कहा है? यहा से शुरू होता है नाटक का पहला फ्लैश बैक। स्थिर बैठा अपलक ताकता प्रोफेसर बीस साल पीछे पहुँच जाता है लड़के का प्रश्न, 'माँ! मेरे बापू कहा है?' 'मन्दिर नहीं गया आज तू?'—प्रश्न के उत्तर में प्रश्न! क्या प्रोफेसर को उत्तर मिल गया? यह नाटक की भाषा का ही कमाल है कि साधारण शब्दों और सहज बोलचाल के वाक्य विन्यास में गहरे दार्शनिक अर्थ झलकते रहते हैं। इस दृश्य में प्रोफेसर साक्षी भाव में अपने अतीत को देखता है, घटनाएँ उसके इर्द गिर्द घटती हैं, लेकिन दूसरे अभिनेताओं के लिए उस की उपस्थिति का कोई अस्तित्व ही नहीं रह गया था।

खण्डहरों में प्रोफेसर को एक सूत्र मिलता है पत्थर की मूर्ति, एक युवा स्त्री पर झुका एक वृद्ध पुरुष—दोनों साप की कुण्डली में बन्द। साप की फुफकार और प्रोफेसर का बदहवास भागना। यह साँप क्या है? मन का भ्रम या भय? वासना या शैतान या रक्षक? किस सम्पदा का रक्षक? क्या उस का दूसरों के लिए जानना आवश्यक नहीं? पूरा नाटक फैंटसी और यथार्थ तथा अतीत और वर्तमान के ताने-बाने की जटिल बुनावट में बुना हुआ है।

फ्लैश बक के दृश्य हल्का नीला प्रकाश लिए हुए शुरू होते। उसी में साधारण प्रकाश मिला दिया जाता। यह व्यवस्था सभी दृश्यों में थी। नाटक में सभी दृश्य शीघ्रता से आगे बढ़ते—फिर अतीत में लौटते। लेकिन इन सब में मूर्तिकार का दृश्य केवल चौथाई मिनट का था पर प्रस्तुति की दृष्टि से चुनौती भरा क्योंकि नाटक यहाँ चरम सीमा की ओर अग्रसर है। अगर यह दृश्य हल्का होता है तो पूरे नाटक के प्रभाव को हल्का कर देता है। इसीलिए जैसे ही धाय अँधेरे मंच की ओर देखना शुरू करती है कि छैनी की ठक ठक शुरू होती है—प्रकाश—युवक युवती की बातचीत—ठक ठक धीरे धीरे बढ़ती जाती है—अचानक मूर्तिकार का प्रवेश—चाकू का वार—चीख के साथ युवक का गिरना—चाकू की आवाज—ठक ठक बन्द—तबला शुरू तेजी से और मूर्तिकार का अपनी ही पुत्री को दबोचना। दृश्य में चाकू से वार के साथ ही प्रकाश झटके से धीमा होता है और जैसे ही मूर्तिकार युवती को दबोचता है वैसे ही फेड आउट। अँधेरे में बचाव का संघर्ष—तबला बन्द। सितार की दर्द भरी आवाज के साथ-साथ धाय पर प्रकाश—जैसे आवाज धाय के कानों में आज भी गूंज रही है। धाय और दर्शक साथ-साथ वर्तमान में आते हैं।

प्रोफेसर की लगातार तलाश के दौरान आशा निराशा के बीच का अंकुर है अन्धी-गूंगी-बहरी लड़की जो चरम हताशा के क्षणों में प्रोफेसर और गूंगी-बहरी लड़की के रिश्ते का फल है—उस रिश्ते का जिसके घटित होने के साथ ही प्रोफेसर खण्डहर के साँप से डँसा जाता है—धाय जिसकी चेतावनी पहले ही दे चुकी थी। यह अन्धी गूंगी-बहरी लड़की किस का संकेत है? यह किस अन्त की ओर ले जाता है हमें?

यह धाय भी क्यों लगातार देखती आ रही है? क्या देखते रहना ही उस की नियति है? क्या काल भी देखते रहने को विवश है? अगर धाय जानती है सब कुछ तो बताती क्यों नहीं? लेकिन क्या वह सचमुच कुछ जानती है या जानने का केवल भ्रम है जिसे बनाये रखना उस की नियति है! 'हूँह? बताना होगा कौन सह पायेगा वह सब और क्या जान लेगा फिर भी? हर कोई अपनी तकलीफ भुगत रहा है। कोई नहीं जानता मैं क्या भुगत रही हूँ जो देखता है वह भी तो भोगता है वह जानना चाहता है समझता है, मैं जानती हूँ। कौन क्या जानता है? जिस ने देखा उस ने भी कुछ नहीं जाना, न उस ने जिस ने भोगा।'

'जो देखता है, वह भी तो भोगता है।' तो क्या काल भी भोगता है जो सब कुछ का द्रष्टा है। क्या हम सब की यही नियति नहीं है? क्या नाटक देखते

हुए दर्शक भी घाय नहीं हो जाता ? और घाय हो जाना क्या एक साथ प्रोफेसर, गूंगी-बहरी लड़की और उन्हीं से उत्पन्न अंधी गूंगी बहरी लड़की हो जाना नहीं है ?

नाटक का अन्त होता है त्याग तुक से जिसे प्रोफेसर के अधूरे काम को पूरा करना है—जिस के माँ बाप यानी इतिहास का कोई पता नहीं है। घाय यह सुन कर अंधी-गूंगी बहरी लड़की की ओर देखती और पागलों की तरह हँसती है। क्या भूत, वर्तमान और भविष्य सब एक साथ मिलकर हँस रहे हैं ? किस पर ? क्या वर्तमान का अतीत से जुड़े रहना अनिवार्य है ? क्या अतीत से कोई छुटकारा नहीं—पर उस छुटकारे के बिना मुक्ति कहाँ है ? अपनी अभिशप्त नियति से मुक्ति। हम हैं यह जानना क्या काफी नहीं ?

नाटक के अभिनेता ही नहीं रंगमंच के सभी सदस्य जैसे नाटक के अहसास को जी रहे थे। यही कारण रहा कि प्रदर्शन के दौरान दोनों दिन में तीन बार बिजली गुल हो जाने के बावजूद दर्शक दम साधे बैठे रहे। बिजली आने पर नाटक उसी रिद्म के साथ जारी होता रहा—पात्र और दर्शक जैसे एक हो गये हों।

बेहद उत्तेजक प्रतिक्रिया हुई। लम्बे समय तक चर्चा होती रही—अधिकांशतः आलेख को लेकर। ऐसे नाटक क्या होने चाहिए ? कहना क्या चाहता है आखिर नाटककार ? क्या हम सब का अतीत नाजायज है—पूरी मनुष्य जाति का। और उसी मात्रा में प्रशंसक भी थे जो कह रहे थे कि नाटक उन्हें अपने अपने 'मन के खण्डहरों में ले गया', कि इस नाटक को वे कभी नहीं भूल पायेंगे। बहुत-सी कमियों के बावजूद यह प्रस्तुति की सफलता है कि दर्शक एक बेचैनी लेकर लौटे। कोई भी श्रेष्ठ रचना एक बार पढ़ने या करने से पूरी तरह सम्प्रेषित नहीं होती—उसे बार-बार पढ़ना-करना जरूरी है। पर आज रंगकर्मियों को इतनी सुविधा कहाँ ? फिर भी एक लम्बे अन्तराल के बाद हिन्दी में एक मौलिक कृति मिली जो बहुत ही गहरे कुरेदती है मन को, बेचैन करती है सोचने को—इस के लिए हिन्दी रंगमंच रचनाकार का ऋणी है।

बीकानेर।

—कैलाश भारद्वाज

अंक प्रथम

पहला प्रवेश

एक कमरा। हल्का अँधेरा है। एक ओर एक खाट पर एक छाया-सी दिखाई देती है। एक आदमी है। उम्र यही कोई बत्तीस-तैंतीस साल। पार्श्व भाग में से रोशनी की कुछ धाई-सी आती है। धीरे धीरे एक लड़की का प्रवेश। उम्र करीब बीस वर्ष। चेहरा गम्भीर। हाथ में लम्प लिये है। आदमी चौंक कर उस की ओर देखता है। एक ओर रखी मेज या ऐसी ही किसी चीज पर लम्प रख देती है—इस तरह कि आदमी का चेहरा साफ दिखाई देने लगे।

प्रोफेसर कौन हो तुम ? माँ कहाँ है ?

लड़की लम्प रख कर उस की ओर एकटक देखती रहती है। कोई जवाब नहीं देती।

मैं पूछ रहा हूँ माँ कहाँ है ? कहाँ गया है ? अभी लौटी क्या नहीं ? उसे चिट्ठी नहीं मिली थी मेरी ? (कुछ पल ठहर कर) और तुम ? तुम कौन हो ?

लड़की चुप रहती है। प्रोफेसर कुछ देर उस की ओर देखता रहता है। फिर एक ओर पड़े सूटकेस को घसीट कर अपने सामने रख लेता है। खोल कर सामान निकालता है। कुछ कपड़े, किताबें, खुर्दबीन आदि। सामान चारपाई पर रखता है। इधर-उधर देखता है और एक ओर रखी मेज से लम्प को उठा कर फिर इधर-उधर देखता है। लड़की फुर्ती से आगे बढ़कर लम्प उसके हाथ से लेती है और एक ओर खड़ी हो जाती है। प्रोफेसर एक पल उस की ओर देखता है और फिर किताबें खाट से उठा कर मेज पर रखने लगता है।

तुम बाद आयी नौकरानी लगती हो। तब तो तुम नहीं थी। (गौर से उसकी ओर देखकर) बल्कि शायद पैदा भी नहीं हुई होगी। यहीं की रहने वाली हो क्या? मुझे जानती हो?

लड़की से कोई जवाब नहीं पाने पर पीछे मुड़ कर देखता है। लड़की बस हाथ में लैम्प लिये खड़ी उसी की ओर देख रही है। कुछ झुंझलाहट का सा भाव प्रोफेसर के चेहरे पर आता है। वह अचानक चीख कर जैसे कुछ कहना चाहता है पर यकायक रुक जाता है और किताब छोड़ कर मेज पर करीने से सजाने लगता है।

मेरी चिट्ठी तो मिल ही जानी चाहिए थी। मिल गयी थी न? फिर भी माँ बाहर क्या चली गयी?

लड़की चुप ही रहती है। प्रोफेसर अचानक हाथ की किताब जोर से जमीन पर फेंकता है। प्रोफेसर को जैसे अचानक समझ में आता है कि उसे इतना उत्तेजित नहीं होना चाहिए। किताब की पुरानी जिल्द फेंकने की वजह से टूट गयी है और कुछ पन्ने बाहर निकल आये हैं। वह किताब और बिखरे पन्नों की ओर देखता है। उन्हें उठाने के लिए वह झुके इस से पूर्व ही लड़की लैम्प फर्श पर रख कर किताब के बिखरे पन्ने इकट्ठे करने लगती है। प्रोफेसर लड़की की ओर देखता रहता है। लड़की पन्ने एकत्रित कर उसे देती है। वह उस की ओर गौर से देखता हुआ पन्ने ले लेता है। लड़की वापिस लैम्प हाथ में लेकर खड़ी हो जाती है।

मेरा मतलब है कि तुम... तुम जवाब क्या नहीं देती? कितनी देर हुई मुझे आये... कुछ पता तो चले?

लड़की फिर भी असहाय सी खड़ी चुप है। प्रोफेसर अचानक जोर से चिल्लाता है... ।

बोलती क्या नहीं? जबान नहीं है? ... सुनाई नहीं देता मैं क्या कह रहा हूँ? बहरी हो क्या?

लडकी के चहरे पर परेशानी और भय के चिह्न दिखने लगे है। प्रोफेसर परेशान-सा एक कोने से दूसरे कोने तक चहलकदमी करता है। अचानक बीच में पड़े सूटकेस से ठोकर खाता है—कुछ फिसलता सा है।

ओह! क्या रख छोडा है बीच में यह सब ?

पाव उठा कर सीत्कारता हुआ अगूठे को दबाता है। फिर पाव को जमीन पर टिका कर खाट की ओर जाता है। खाट पर बैठ जाता है। लडकी लम्प को बीच की ओर ले जा कर पाव की ओर देखती है और घबरायी-सी खडी हो जाती है। प्रोफेसर उस को घबराये देख कर कुछ नरम पडता है।

लेकिन तुम मेरी बातों का उत्तर क्या नहीं देती ? कुछ बोलने से खा तो नहीं जाऊँगा मैं तुम्हे। कितनी देर हुई है मुझे आये। मॉं का भी पता नहीं। और तुम कुछ बताती ही नहीं।

लडकी लैम्प मेज पर रख कर अटची से बिखरी चीजें उस में डालती है और अटची को चारपाई के नीचे सरका देती है। फिर लम्प उठाने मेज की ओर जाती है।

नाम क्या है तुम्हारा ?

पूछता हुआ प्रोफेसर चारपाई से उठ कर लडकी के पीछे जा कर खडा हो जाता है। लडकी लम्प उठा कर पीछे मुडती है तो उसे सामने ही खडा पा कर डर सी जाती है और लम्प मेज पर रख देती है। उसे चुप ही पा कर प्रोफेसर फिर उत्तेजित हो जाता है।

नाम पूछ रहा हूँ तुम्हारा। तुम से कह रहा हूँ, दीवार से नहीं।

लडकी बिल्कुल भयभीत हो गयी है। प्रोफेसर और क्रोधित होता है और लडकी को परे धकेल देता है।

मेरा नहीं तो कहीं जा कर (*लडकी गिरते गिरते बचती है।*)

मॉं भी जाने कहाँ मर गयी ?

अचानक धाय का प्रवेश।

धाय — मर गयी तभी तो चिल्ला रहे हो यहाँ आकर। वह थी तब कहाँ थे? कभी खबर भी ली?

प्रोफेसर — क्या? माँ मर गयी! कब? कैसे? तुम? तुम कौन हो?

धाय लड़की की ओर देखती है। चल कर उसके पास जाती है। सर पर हाथ फिराती है।

धाय — इस के पैदा होते ही। बीस वर्ष होने को आये। तुम्हें घर से गये भी तो इतना ही अर्सा हुआ होगा न? तुम्हारे जाने के करीब साल भर बाद ही तो हुई यह।

लड़की धाय से लिपट-सी जाती है।

प्रोफेसर — य लड़की ये तुम तुम धाय हो न?

धाय — हाँ। और ये तुम्हारी बहिन।

प्रोफेसर — बहिन! पर पर यह कैसे? मां मर पिता ?

धाय — क्या? तुम कैसे पैदा हो गये थे? बाकी सब कैसे पैदा हो जाते हैं?

प्रोफेसर — मैं? ओह ।

खाट पर परेशान सा मुंह छिपाकर बैठ जाता है। धाय व लड़की उस की ओर देखती रहती है।

तो क्या सचमुच

लड़की लम्प को उठा कर देखती है और उसे लेकर पार्श्व में चली जाती है। मंच पर हल्का अंधेरा हो जाता है। एक कोने में तीव्र प्रकाशवृत्त। एक औरत बैठी कुछ घरेलू काम कर रही है। उम्र यही कोई तीस बरस के आसपास। करीब ग्यारह-बारह वर्ष का एक लड़का अचानक आता है। चिल्लाता हुआ।

लड़का — माँ माँ

माँ — क्या है? चिल्ला क्या रहे हो?

लड़का — माँ, मेरे पिताजी कहाँ है?

माँ कुछ देर उस की ओर देखती है।

मा मन्दिर नहीं गया आज तू ?

लड़का कहीं नहीं जाना मुझे। पहले बताओ बापू कहाँ है ?

मा तुझे बताया न बाहर गये हैं। कितनी बार तो बता चुकी हूँ।

लड़का नहीं। तुम झूठ बोलती हो। सभी के बापू घर आते है तो वे क्या नहीं आते ? बताओ।

माँ मुझे नहीं मालूम। लेकिन तुझे तकलीफ क्या है बापू के बिना ? मैं क्या प्यार नहीं करती तुम्हें ?

लड़का मुझे बापू चाहिए। बताती क्या नहीं ? कहाँ है वो ?

माँ तंग मत करो। जाओ, मन्दिर जाओ। आरती का वक्त हो रहा है।

लड़का नहीं। तुम झूठी हो। ठीक कहते है वे सब।

मा चौंकती है।

मा कौन वे सब ?

लड़का बस्ती वाले।

उत्तेजित होती है।

माँ क्या कहते है वे ?

लड़का गन्दी है तू। हाँ, ठीक कहते हैं गन्दी गन्दी

माँ तू तू भी !

लड़का हाँ, गन्दी है तू गन्दी

माँ का चेहरा अचानक कठोर और विकृत हो जाता है। वह जैसे आवेश में आकर बोलती है।

माँ और तू क्या है फिर ? उसी गन्द से पैदा हुआ कीड़ा ! तू और ये सब कमीने ! कौन जानता है किस का बाप कौन है ? कमीने ! कुत्तों की औलाद ! और तू खून पिला कर पैदा किया तुझे खून पिलाकर पाल रही हूँ और अब तू चल निकल यहाँ से सूअर

लड़का हाँ, हाँ चला जाऊँगा नहीं रहूँगा तुम गन्दी कुतिया के साथ।

गुस्से में आकर पार्श्व में चला जाता है। माँ और भी उत्तेजित होकर चिल्लाती हुई दूसरे पार्श्व में जाती है।

मा हाँ, चला जा। वापिस मत आना असल बाप का है तो। कमीना!

प्रकाशवृत्त धीरे धीरे मिट जाता है। लड़की लम्प ले कर फिर पार्श्व से आती है। बाकी लोग फिर साफ दिखने लगते हैं।

प्रोफेसर तो क्या सचमुच मां

धाय हाँ, एक तरह से लोग ठीक कहते थे। पर इतना जानती हूँ तुम्हारी माँ बहुत प्यार करती थी तुम्हें। बहुत ढूंढा तुम्हें पर तुम नहीं मिले। दिन रात रोती रहती थी। तुम्हारे चले जाने की वजह से पागल-सी हो गयी। पता नहीं उस बीच कैसे यह पेट में आ गयी। कमजोर हो गयी थी नहीं सह सकी चल बसी।

यह सुनता हुआ प्रोफेसर उदास हो जाता है।

प्रोफेसर यही है वह लड़की।

धाय हाँ, यही। तुम्हारी बहिन।

प्रोफेसर बहिन!

धाय क्यों? एक ही पेट से तो पैदा हुए?

प्रोफेसर कुछ पल चुप रहता है।

प्रोफेसर पर यह जवाब क्यों नहीं देती मेरी बातों का?

धाय कैसे देगी? जन्म से ही तो गूंगी बहरी है।

प्रोफेसर कुछ खो सा जाता है। उदासी कुछ और घनी हो जाती है।

क्या सोचने लगे? सुन तो रहे हो न?

प्रोफेसर हाँ हाँ

लड़की की ओर देखता है। लड़की की आखें गीली सी हो रही है।

यह जानती है मैं कौन हूँ ?

धाय हाँ तुम्हारी चिट्ठी मिली तो मैं ने समझा दिया था। इशारा मे काफी बातें समझ लेती है।

प्रोफसर धीरे-धीरे लडकी की ओर जाता है। लडकी की आँखों से आँसू गिरते हैं। प्रोफसर के चेहरे पर उदासी, करुणा और असमजस का मिलाजुला भाव है। धाय देखती रहती है। लडकी अचानक पार्श्व मे चली जाती है। पीछे पीछे धाय। मच पर अँधेरा हो जाता है।

अक प्रथम

दूसरा प्रवेश

मच पर धीरे धीरे प्रकाश होता ह। प्रोफसर एक कोने म मेज पर कागजों का ढर सामने रखे बठा ह। अलग-अलग उठा कर आईग्लास या खुदबीन की सहायता से कुछ पढने की कोशिश करता ह। कमरे म एक ओर पत्थर की पुरानी मूर्तियाँ रखी है। मेज पर एक गिलास म चाय रखी ह एक ओर। लेकिन प्रोफसर का ध्यान उस ओर नहीं ह। वह अपने काम म डूबा हुआ ह। लडकी पाश्व म से आकर देखती ह। वह एक उडती सी नजर उस पर डाल कर फिर अपने काम म डूब जाता ह। लडकी एक ओर रखी चारपाई पर पडे कपडों को नीचे पडी अटची को निकाल कर उस म रखती है—इस बात का ध्यान रखते हुए कि प्रोफसर की एकाग्रता मे खलल न पड। अचानक उस की नजर चाय के गिलास पर पडती ह। जा कर गिलास छूकर देखती ह कि चाय ठण्डी हो गयी ह। गिलास उठा कर पाश्व म चली जाती ह। प्रोफसर अचानक चौंक कर उस की ओर देखता ह।

प्रोफेसर अरे, ठहरा। अभी पी नही मई सुनायी ही नही देगा ता कस रुकेगी।

फिर अपने कागजों की ओर नजर डालता है तो चौंक कर उन म से एक फाटो उठाता है। यह किसी पुराने शिलालेख की फोटो प्रति है। आईग्लास म स उसे गौर से देखता है। लडकी एक दूसरे गिलास मे चाय लेकर आती है और उस के हाथ से फोटो ल लेती है। प्रोफसर चौंक कर देखता है। लडकी चाय का गिलास उस के हाथ मे पकडा दती है। वह चुस्की लेता है।

वाह! क्या चाय है! गर्मागम! कितना खयाल करती हो तुम मेरा!

लड़की प्रोफसर को खुश देख कर प्रसन्न नजर आती ह। प्रोफसर चाय का गिलास मुह तक ले जाता है। लड़की हाथ का फोटो मेज पर रख कर जमीन पर बठ जाती ह और मुग्ध भाव से उस की ओर देखती रहती है।

लाजवाब चाय बनायी है तुम ने। लेकिन मेरे ऐसा कह दने से तुम समझोगी कैसे ?

इशारों से समझाता ह कि चाय बहुत ही अच्छी बनी है। अचानक धाय का प्रवेश।

धाय बहुत खुश दिख रहे हो दोना। क्या बात है। ऐसा क्या मिल गया है ?

प्रोफेसर हाँ, लाजवाब चाय मिली है धाय माँ। यह लड़की तो दिन रात मेरे ही काम म लगी रहती है।

धाय बहिन जो है तुम्हारी। तुम्हारे सिवा इस का है ही कौन।

प्रोफसर 'बहिन' शब्द सुनते ही अचानक चुप हो जाता ह। चाय का गिलास मेज पर रख देता ह।

क्यो ? चाय रख क्या दी ?

प्रोफेसर बस, अब इच्छा नही है। अब मैं जाऊँगा—हो सकता है मुझे देर हो जाय।

धाय कहाँ ?

प्रोफेसर पुराने मन्दिरो की ओर।

धाय क्या ? अभी परसो देर रात तक वही तो थे तुम। क्या है उन खण्डहरो मे जो बार-बार तुम वहीं जाते हो ?

प्रोफेसर वह सब तुम नही समझोगी धाय माँ। मैं पता लगा कर रहूँगा।

धाय किस बात का पता ?

प्रोफेसर खण्डहरा के रहस्य का। किस ने बनाया उन्हें ? किस के मन्दिर थे वहाँ ? क्यो थे ?

धाय बेकार बात । मन्दिर कोई हो, किसी न किसी देवता का ही तो होगा। और इस माथापच्ची से फायदा भी क्या ?

प्रोफेसर सुनो, तुम कुछ जानती हो इन के बारे मे ?

धाय हाँ।

प्रोफेसर क्या ? क्या जानती हो तुम ! बताओ मुझे। मुझे लगता था कि जरूर कुछ जानती हो।

धाय यही कि सदा से ऐसे ही है। मैं ऐसा ही देखती आयी हूँ इन्हें हमेशा हमेशा से।

प्रोफेसर तुम कभी गयी हो वहाँ ?

धाय अजीब-सा लगता है वहां जाकर। अजीब सा खिंचाव अजीब सा डर !

प्रोफेसर डर ? डर कैसा ?

धाय नहीं मालूम। पर डर सा लगने लगता है वहाँ जा कर। मन कैसा तो हो जाता है !

दोनों के चेहरों को देख कर लड़की भी डरी सी उन की ओर देखती रहती है।

प्रोफेसर मैं नहीं डरता लेकिन ! सब कुछ खोज निकालना है मुझे।

धाय क्या खोज निकालना है ? खोज निकालना है ! क्या कर लोगे खोज निकाल कर ?

प्रोफेसर नहीं समझोगी। तुम नहीं समझोगी !

धाय क्या ? मैं धान नहीं खाती ? मैं पूछती हूँ तुम जाते ही क्या हो वहां उन पत्थरों से सर फोड़ने ? कुछ नहीं मिलेगा वहाँ से। कभी किसी पत्थर के पीछे से कोई साँप बाहर मिल जाय फुफकारता हुआ।

प्रोफेसर साँप ?

धाय हाँ, साँप ! गड़े रहस्यों के रक्षक है वे। पछताओगे कभी ! कहे देती हूँ।

प्रोफेसर जमाना हो जाने से पछताना बेहतर है। अपने इतिहास को जानना उतना ही जरूरी है जितना साँस लेना।

धाय यह सब नहीं जानती मैं ! मुझे लगा, मैंने चेता दिया। आगे तुम जानो।

प्रोफेसर यह सब कहने की जरूरत नहीं, धाय मा।

लड़की की ओर नजर जाती है। अचानक उत्साह में भर जाता है।



रूपा पारीक धाय की भूमिका मे ।



रूपा पारीक (धाय) और नीलम शर्मा (गूँगी बहरी लडकी) ।



रूपा पारीक (धाय) और राकेश मूथा (प्रोफेसर) ।

राकेश मूथा (प्रोफेसर), रूपा पारीक(धाय) और नीलम शर्मा (गूंगी बहरी लड़की) ।

लेकिन मैं खोज निकालूँगा। सब कुछ मालूम होगा एक दिन। सच कहता हूँ, धाय माँ।

धाय के चेहरे पर मुस्कराहट देख कर उत्तेजित हो जाता है।

तुम हँस रही हो। विश्वास नहीं होता न तुम्हें। देखो, मैं देता।

मेज पर से कुछ फोटो प्रतियाँ उठा कर दिखाता है।

देखो! कैसे पता नहीं चलेगा?

धाय एक फोटो हाथ में लेकर देखती है। ऐसा भाव प्रदर्शित करती है जैसे कुछ समझ में नहीं आ रहा।

धाय — कुछ भी तो नहीं है। ये सब क्या तिरछे चकोर बने हैं माण्डणा की तरह। यह इधर तो साँप जैसा कुछ बना लगता है।

प्रोफेसर — तभी तो कहा कि तुम नहीं समझोगी।

उसके हाथ से फोटो लेकर दिखाता है।

ये देखो, ये। ये सारा एक शिलालेख है पुराना। खण्डहरों में ही मिला है मुझे। उसी का फोटो है यह।

धाय — ऐसे तो कई होंगे वहाँ।

प्रोफेसर — सब को खोज निकालूँगा।

धाय — क्या लिखा है इस पर?

प्रोफेसर — वही तो। वही तो समस्या है। यही समझ में नहीं आ रहा।

धाय — क्यों? तुम तो पढ़े लिखे हो?

प्रोफेसर — उस से क्या? इन शिलालेखों की लिपि और भाषा कुछ अजीब किस्म की है। पढ़े ही नहीं जा रहे। कोई नहीं पढ़ पाया अब तक। लेकिन मैं पढ़कर रहूँगा इस बार। इसीलिए तो लौट आया हूँ फिर यहाँ।

धाय — इसीलिए आये हो? मैंने तो समझा था कि माँ की याद खींच लाई है तुम्हें।

प्रोफेसर — एक वजह वह भी है। मैंने यह भी सोचा कि शायद अब माँ बता दे।

धाय — क्या बता दे?

म किस का बटा हूँ ?

प्रोफेसर यही कि कि मैं म किस का बटा हूँ ?

धाय कुछ पल चुप रहती ह।

धाय क्या यह काफी नही कि तुम अपनी माँ के बट हो। माँ का कोद महत्त्व नही ?

प्राफेसर वह सब ठीक है अपनी जगह। लेकिन लेकिन मा अकेली ता पैदा नही कर सकती थी न ? पर क्या नही बताया उस न ? अब म कहाँ जाऊँ ? किस से पूछू ? तुम। हाँ तुम। तुम जरूर जानती हो सब कुछ। तुम शुरू से उसके साथ रही बताओ बताओ न किस का बेटा हूँ मैं मुझे इस आग से निकालो धाय माँ

धाय चुप और कठोर हो जाती ह। प्रोफसर अचानक धाय क चेहरे की ओर देखकर उत्तजित हो जाता ह।

बोला मा बोला।

प्रोफेसर अपना चेहरा दानों हथलियों स छुपा लता ह। धाय वस ही खडी एकटक देखती रहती ह। प्रोफसर फिर धाय की आर देखता ह। अचानक उत्तजित होकर उस का गला पकड लता ह।

क्या नही बताती ? मार डालूगा तुम्ह। बोला जरूर जानती हो तुम बोला।

गला दबाने का अभिनय करता ह। लडकी, जो अब तक डरी-सी देखती रही थी, दौडकर धाय की बाह पकड लेती ह। प्रोफेसर की आँखें लडकी की आँखों से मिलती हैं। प्रोफेसर गला छोड दता ह और दूसरी ओर मुह कर खडा हो जाता ह।

बताती क्यो नही मुझे ?

धाय मैं माँ नही हूँ तुम्हारी।

प्रोफेसर लेकिन माँ ने जरूर बताया होगा तुम्ह ?

धाय नही।

प्रोफेसर तुम हमेशा उस के साथ रही।

धाय हाँ।

प्रोफेसर वह हर बात तुम से कहती थी।

धाय हाँ।

प्रोफेसर तो फिर?

धाय तो फिर क्या?

प्रोफेसर तो फिर तुम्हें क्या नहीं मालूम कि   कि   मैं

धाय कि तुम कैसे पैदा हुए?

प्रोफेसर हाँ।

धाय क्या पता स्वयं उसे ही मालूम न हो।

प्रोफेसर यह कैसे हो सकता है?

धाय बहुत सी बातों के बारे में पता नहीं चलता कि वे कैसे हो जाती हैं।

प्रोफेसर लेकिन खुद माँ को?   नहीं   तुम झूठ बोलती हो। बहकाना चाहती हो मुझे मैं   मैं पता लगाकर रहूँगा   सब कुछ।

मेज के पास जाकर इधर उधर देखता है। कुर्सी की पीठ पर लटका एक झोला उठा कर कंधे पर टाग लेता है। धाय और लड़की उस की ओर देखती रहती है। अचानक लड़की से आखें मिलती है। लड़की के चेहरे पर सहानुभूति और अपनत्व के भाव हैं। प्रोफेसर लड़की की ओर देखता रहता है। धाय दोनों को देखती रहती है। मंच पर धीरे धीरे अँधेरा हो जाता है।

अक द्वितीय

पहला प्रवेश

मच पर धीरे धीरे ए‍क कोने म प्रकाश होता है। धाय एक कोने म बठी अनाज बीन रही है। लडकी बार-बार पारव की ओर जाकर झाकती है और निराश हो कर वापस लौट आती ह। धाय बार-बार उसे आते जाते देखती ह। लडकी धाय से आँखें बचाती है। अचानक लडकी फिर पारव की ओर जा कर झाँकती है। धाय अनाज बीनना छोडकर उसके पीछे जा खडी होती हैं। लडकी के पीछे मुडते ही उसकी आँखें धाय से मिलती हैं तो वह खडी ही रह जाती ह। धाय गौर से उस की आखों मे देखती ह।

धाय वही नही जायेगा। यही आयेगा लौट कर।

लडकी धाय की ओर देखती रहती ह। धाय इशारे से उसे समझाती है। लडकी कृतज्ञता से उस की ओर देखती ह। धाय उस चारपाई पर ले जा कर बठा देता है।

कितनी ही बार तो गया है इस तरह—पर यही आया है लौट कर। इस घर से खण्डहरो और खण्डहरो से इस घर तक निकालते रहो चक्कर दया आ जाती है कभी-कभी तडपता देख कर पर उपाय ही क्या है यही मिला है उसे विरासत मे।

अचानक पारव मे से प्रोफसर का प्रवेश। हाफ रहा है बुरी तरह। घबराया हुआ। लडकी घबरा कर उठ खडी होती है। प्रोफसर सीधा जा कर चारपाई पर बठ जाता है। हाँफना जारी रहता है। लडकी की ओर देख कर पानी का इशारा

करता है। लडकी दौड कर पास मे से पानी लेकर आती है। आदमी गटगट पी जाता है। इधर-उधर गौर से देखता है। अभी घबराहट मिटी नहीं है। धाय यह सब गौर से देखती रहती है।

धाय क्या बात है ? इतने घबराये क्यो हो ?
प्रोफेसर वो वो साँप
धाय साँप ! कहाँ ?

प्रोफेसर बाहर की ओर इशारा करता है।

बाहर ?

प्रोफेसर स्वीकार मे सर हिलाता है। धाय बाहर की ओर जाती है। प्रोफसर आशंकित सा चारपाई से उठ जाता है। लडकी की ओर देखता है। धाय लौट कर आती है।

कहा था ? बाहर तो नही दिखाई दिया।

तब तक प्रोफेसर सभल-सा जाता है।

प्रोफेसर आया था पीछा करता हुआ ?
धाय फिर ?
प्रोफेसर नही मालूम। मैं तो सीधा यहा चला आया।
धाय कहाँ मिल गया तुम्हे ?
प्रोफेसर खण्डहरा म। पुराने मन्दिर का तहखाना है शायद वहाँ
धाय बहुतेर साप हैं खण्डहरा म। छेड दिया होगा तुमने।
प्रोफेसर नही, मैंने कुछ नही किया।
धाय किसी बिल का ता नही कुरेदा ?
प्रोफेसर नहीं ता।
धाय ता फिर ? खुला घूम रहा था क्या ? पाँव पड गया होगा ?
प्रोफेसर नहीं।
धाय ता फिर कब ?
प्रोफेसर मैं दिन भर खण्डहरा म घूमता रहा। शाम के झुटपुटे म पुराने मन्दिर के पिछवाडे की ओर चला गया। कुछ तहखाना-सा

वना हुआ है वहा। टूटी फूटी सीढियाँ भी वनी है नीचे उतरने के लिए। वहीं एक तिकोने पत्थर पर एक मूर्ति खुदी हुई थी अनगढ पर अजीव, बहुत अजीव। सोचा, इसे उठा कर घर ले चलू। पत्थर को दोना हाथो स पकड कर हिलाने की कोशिश करने लगा कि अचानक फुकार सुनाई दी। एक दम सामने खडा था साँप फण ताने घबरा कर उलटे पावा भागा कुछ देर वाद मुड कर देखा तो वही साप वैसे ही फण ताने। भागता रहा मैं जव भी पीछे देखू तो वही साँप वैसे ही फण तान। घर म आन पर वह देखो वह साप

घवराया सा उछल कर लडकी के पीछे चला जाता है।

वह फण वचाओ वह

लडकी को पकड लेता है। घिग्घी-सी बँध जाती है। आखें फट सी जाती है। धाय लडकी की ओर देखती ह। वह भी घवराइ सी इधर उधर देख रही ह। धाय भी चारों ओर गौर से देखती ह। लडकी धाय की ओर देखने लगती है। एक अजीव सी चुप्पी छा जाती ह। धाय अचानक आगे वढ कर प्रोफसर के गाल पर थप्पड मारती ह।

धाय वहाँ है साप? अव भी दिख रहा है?

प्रोफेसर सहमा हुआ सा इधर उधर देखकर सिर हिलाता ह।

मैंने पहले ही कह दिया था। तुम नही माने। किसी का कुछ नही मिला इन खण्डहरा से आज तक सिवा इन साँपों के डँस ही लेता तो

प्रोफेसर अब भी कुछ घवराया सा दिखता ह।

नही, अब डरने की कोई वात नही।

प्रोफेसर को ले जाकर चारपाइ पर विठा देती है।

कुछ देर आराम कर लो। मन ठीक हो जायेगा।

प्रोफसर घबराया सा चारपाई पर लेट जाता है।

चाय पियोगे।

लड़की को इशारे से कुछ समझाती है। फिर अचानक उसे वहीं रुकने का इशारा करती है।

ठहरो, मैं खुद बना लाती हूँ।

धाय पाइर्व में चली जाती है। लड़की अब धीरे धीरे चारपाई के पास जा कर खड़ी होती है। नीचे बैठ कर प्रोफसर के सर पर हाथ फिराने लगती है। प्रोफसर उस का हाथ पकड़ कर उठ कर बैठ जाता है। चाय का गिलास लिये धाय का प्रवेश।

लो, गर्मागर्म पी लो। थकान मिट जायेगी।

प्रोफसर गिलास हाथ में पकड़ कर चाय की चुस्कियाँ लेने लगता है। एक-दो बार चौंक कर इधर-उधर देखता है।

नहीं डरो नहीं यह घर भी क्या तुम्हें खण्डहर लग रहा है?

प्रोफसर चौंक कर उस की ओर देखता है। वह उसी की ओर देख रही है। वह नजरें घुमा लेता है।

पियो, चाय पियो।

प्रोफसर चाय की चुस्की भरता है।

सुनो, ये वही मूर्ति थी न एक छोटे पत्थर पर खुदी हुई एक जवान-सी औरत लेटी है और उस पर एक बूढ़ा-सा आदमी झुका हुआ है?

प्रोफसर खड़ा हो जाता है।

प्रोफसर तुम्हें कैसे मालूम?

धाय वही है न? दोनों को एक साँप की कुण्डली में बन्द दिखाया गया है?

प्रोफेसर तुम्हें कैसे मालूम हुआ उस के बारे में ?

धाय उस की ओर देखती व्यंग्यात्मक भाव से मुस्कराती है। प्रोफेसर से जसे सहन नहीं होता। गिलास एक ओर पटक कर धाय को पकड़ लेता है।

बोलो। तुम्हें कैसे मालूम हुआ ? तुमने कब देखी वह मूर्ति ?

धाय एकटक उस की आखों में देखती है। वह कुछ कमजोर सा पड़ता है। धीरे धीरे अपने हाथ कन्धों पर से हटा लेता है।

धाय मुझे क्या धमकाते हो ? साप दिखा तो क्या हो गया ? भाग क्यो खड़े हुए ?

प्रोफेसर तुम जरूर जानती हो उस मूर्ति के बारे में मेरे बारे में, मेरे जन्म के बारे में सब के बारे में बताती क्यों नही ? आखिर क्या मिल जायगा तुम्हें यह सब छुपाने से।

धाय तुम्हें ही क्या मिल जायेगा यह सब जान कर ? तुम हो, यह क्या काफी नहीं ?

प्रोफेसर नहीं, मैं जिन्दा नहीं रह सकूगा वर्ना मेरे लिए यह सब जान लेना जरूरी है।

धाय जिन्दा रहने के लिए कुछ भी जानना जरूरी नहीं। जो जान लेता है वह कई बार जिन्दा ही मर जाता है। देखो इसे देखो यह नहीं जानती थी कुछ भी तुम्हारे आने से पहले—कितनी खुश रहती थी तब।

प्रोफेसर अब क्या यह दुखी रहती है ?

धाय हा।

प्रोफेसर क्यों ?

धाय तुम्हारे कारण।

प्रोफेसर मेरे कारण ! क्यों ?

धाय तुम्हारे दुख से दुखी हो गई यह भी।

अचानक उत्तेजित हो जाती है।

मैं पूछती हूं तुम आये ही क्यों यहाँ लौट कर ?

प्रोफेसर मैं नहीं जानता। पर मैं और कहीं नहीं जा सकता था।

धाय — तो गये क्यों थे भाग कर ?

प्रोफेसर — तब लगता था यहाँ नहीं रह सकूँगा। कहीं भी चले जाना चाहता था — जहाँ कोई यह न पूछे कि मैं किस का बेटा हूँ।

धाय — फिर ?

प्रोफेसर — किसी ने नहीं पूछा। एक मिशन वाले ने अपना नाम दिया मुझे। पढ़ाया लिखाया भी।

धाय — तो फिर वापस क्यों चले आये ?

प्रोफेसर — एक रात भी सो नहीं सका फिर भी। बाप का नाम मिल गया था — लेकिन नाम से क्या होता है ? कोई जैसे खींच कर बुलाता था।

धाय — माँ की याद ?

प्रोफेसर — वह भी — पर लगता था एक न एक दिन यहीं आ कर सकूँगा अपने पिता के बारे में — अपने जन्म के बारे में। ये खण्डहर मंदिर, यह घर सब बुलाते थे। पुरातत्त्व में रुचि है मेरी — कुछ नाम भी है। एक दिन इस खण्डहर की बहुत याद आयी। चला आया — सोचा अब शायद माँ भी कुछ बता दे।

धाय — मैंने तुमसे पहले भी कहा था। हो सकता है तुम्हारी माँ को भी न मालूम हो।

प्रोफेसर — तो किसे मालूम है ? तुम बताती क्यों नहीं ?

धाय — तुम चले क्यों नहीं जाते यहाँ से। अपनी इस बहिन को भी ले जाओ।

प्रोफेसर — बहिन को ?

धाय — हाँ, उसे भी ले जाओ अपने साथ। कोई फायदा नहीं यहाँ रहने से। बर्बाद हो जाओगे यहाँ रहोगे तो।

प्रोफेसर — क्यों ? बर्बाद क्या हो जाऊँगा ?

धाय — कभी डँस लेगा कोई साँप — इस खण्डहर में — तड़प-तड़प कर मरोगे — पानी भी नहीं देगा कोई।

प्रोफेसर — ऐसा क्या कहती हो ? तुमने तो अपना दूध पिलाया है हमें।

धाय — तभी तो कहती हूँ।

प्रोफेसर — तुम्हारा कुछ भी समझ में नहीं आता। कभी तुम सँभालती हो, कभी डराती हो। क्या चाहती हो तुम ?

अचानक उत्तेजित हो जाती है।

धाय — यही कि तुम लोग पीछा छोड़ो मेरा किसी तरह अब। कब तक सहती रहूँ यह सब।

प्रोफेसर — क्या सब?

धाय — समझते क्या हो? बड़ा सतरनाक है यह खेल जो तुम खेल रहे हो।

प्रोफेसर — कोई खेल नहीं खेल रहा मैं। उकता गयी हो तो तुम ही क्यों नहीं चली जाती हम छोड़कर?

धाय — निकाल देना चाहते हो?

प्रोफेसर — नहीं लेकिन तुम ही परेशान हो गयी हो हम से तो फिर क्या?

धाय — नहीं। मैं नहीं जा सकती कहीं जब तक तुम लोग यहाँ हो।

प्रोफेसर — क्या? ऐसी क्या मजबूरी है तुम्हारी?

धाय — सब कुछ देखते रहना होगा मुझे। तुम नहीं समझोगे।

प्रोफेसर — क्या नहीं समझूँगा मैं? क्या बात है ऐसी? तुम कुछ छुपा रही हो तुम जरूर कुछ छुपा रही हो तुम तुम देख लूँगा कब तक बताना होगा तुम्हें बताना ही होगा सब।

झुंझलाता हुआ प्रोफेसर पार्श्व में चला जाता है। लड़की घबरायी हुई सी पीछे पीछे जाती है। सिर्फ धाय बची रहती है। चेहरे पर तनाव।

धाय — हुँह बताना होगा। कौन सह पायेगा वह सब और क्या जान लेगा फिर भी? हर कोई अपनी तकलीफ भुगत रहा है।

कोई नहीं जानता मैं क्या भुगत रही हूँ। जो देखता है वह भी तो भागता है वह जानना चाहता है समझता है मैं जानती हूँ कौन क्या जानता है? जिस ने देखा उस ने भी कुछ नहीं जाना न उस ने जिस ने भोगा।

धाय धीरे धीरे एक कोने की ओर बढ़ती जाती है। बाकी मंच पर अँधेरा होता जाता है। कोने में पहुँच कर धाय बैठ जाती है। अँधेरे मंच की ओर ताकती है। इस कोने में अँधेरा हो जाता है और दूसरी ओर एक हल्का प्रकाश वृत्त जिस में एक युवक और युवती लेटे हुए दिखते हैं। युवती प्रथम अंक के प्रथम प्रवेश वाली माँ है पर अभी उम्र करीब उन्नीस-बीस बरस की दिख रही है। प्रकाश वृत्त के धीरे धीरे कुछ स्पष्ट होने के साथ लड़की उठ कर मंच की ओर पीठ कर कपड़े ठीक करने का अभिनय करती है। युवक भी वैसा ही करता है।

युवक लेकिन यह ठीक नहीं हुआ। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए था।
युवती क्या?
युवक पहले विवाह होना चाहिए था।
युवती मुझे न जाने क्या डर-सा लग रहा था।
युवक डर किस बात का आखिर?
युवती यही कि शायद मैं वक्त भर चाहती थी कि खुद को तुम्हें अर्पित कर दूं विलकुल मेरे ही जैसे लगते हो तुम मुझे।
युवक तो विवाह तो होता ही न
युवती मैंने कहा न कि मुझे डर लग रहा था।
युवक यही तो किस बात का डर
युवती कि शायद शायद यह विवाह न हो सके या और कोई झंझट
युवक झंझट क्या?
युवती तुम समझते क्या नहीं?
युवक तुम बताओ तब न।

युवती कुछ देर उलझन में रहती है। फिर एकाएक अपने पर नियन्त्रण करती है।

युवती आजकल पिताजी जिस तरह मुझे देखते हैं
युवक क्या कह रही हो दिमाग चल गया है तुम्हारा ?
युवती नहीं। ठीक कह रही हूं। तुम्हारे गुरु हैं व पर मेरे तो पिता हैं।
युवक लेकिन लेकिन यह क्या?
युवती व कई दिनों से एक मूर्ति बना रहे हैं मुझे सामने बिठाकर।
युवक हां, मुझे मालूम है।
युवती पर शायद तुम्हें यह नहीं मालूम कि मेरी शक्ल मेरी मां से बहुत मिलती है।
युवक वे तो तुम्हारे बचपन में ही
युवती हां मूर्ति बनाते हुए जब वे मेरी ओर देखते हैं तो कई देर देखते ही रह जाते हैं जैसे व मुझ में मां को देख रहे हों।
युवक क्या उन्होंने कुछ
युवती नहीं पर मुझे देखते हुए जिस तरह सहलाते हैं मूर्ति को
युवक अरे मिट्टी की मूर्ति (दोनों कुछ पल चुप हो जाते हैं।)
युवती सुना, ऐसी कुछ कथा भी तो है न?

युवक क्या ?

युवती कि किस तरह पिता ने पुत्री मे ?

युवक मुझे लगता है यह सब तुम्हारा वहम है।

युवती नही।

युवक तो फिर हम यह जगह छोड देनी चाहिए। चलो कही और चलें।

युवती कहा ?

युवक कही भी। चल सकोगी ?

युवती हा।

अचानक मूर्तिकार का प्रवेश। हाथ मे चाकू लिए है। 'गुरुद्रोही चांडाल' कहता हुआ झपट कर युवक पर वार कर देता है। एक दर्दनाक चीख के साथ युवक दम तोड देता है। लडकी 'नहा नहीं' चीखती हुई युवक के पास जाती है। मूर्तिकार तीखी नजरों से लडकी की ओर देखता है और झपट कर उस दबोच लेता है। युवती अपने को छुडाने के लिए सघर्ष करती है पर सफल नहीं हो पाती। मच पर अँधेरा हो जाता है। थोडी सी देर बाद एक कोने मे प्रकाश वृत्त जिस मे धाय बैठी है। अँधेरे मच को तकती हुई।

धाय मैने चेता दिया था उसे। पर वह वह जैसे शिष्य का गुर न हो और फिर पुत्री के साथ पिता ने पागल हो गया तो आश्चर्य क्या जाने कहा चला गया कुछ ही दिन बाद तो खबर मिली थी उस लावारिस लाश की आत्महत्या की, कहते है। हुलिया मिलता था उस मूर्तिकार से क्या पता

अचानक पार्श्व से प्रोफेसर और लडकी का प्रवेश।

प्रोफेसर अभी तक यही बैठी हो। क्या कर रही हो इस अँधेर म। बत्ती तो कर ली होती। चुप क्यों हो ?

धाय प्रोफेसर को ओर देखती है—फिर लडकी की ओर। फिर दोनों की ओर देख कर मुस्कुराती है। दोनों उसे देखते रहते हैं। मच पर धीरे धीरे अँधेरा हो जाता है।

अक तृतीय

पहला प्रवेश

मच पर धीरे धीरे रोशनी होती ह । एक ओर वही लडकी बठी कोई फटा हुआ कपडा सी रही ह । उम्र कुछ बढ गयी ह । उसके पास बठी एक अँधी लडकी ऊँघ रही ह । उम्र करीब पन्द्रह वष । धाय का प्रवेश । हाथ मे कुछ पोटली सी लिये ह । वह काफी बुढिया गयी लगती ह । ऊँघ रही लडकी को देख बडबडाती ह ।

धाय फिर पडी ऊँघ रही है । और कुछ काम नही है तुझे । दिन भर पडे ऊँघते रहा बस ।

पोटली एक ओर रख कर चारपाई पर बठ जाती ह । लडकी की ओर देख कर अचानक दयाद्र हो उठती ह ।

लेकिन और कर भी क्या तू । किस का पाप भुगते कौन ! अच्छा, उठ । चल खाले कुछ । दिन भर की भूखी होगी बेचारी । इस माँ के पास ता है ही क्या देने को ? जन्म दे दिया, यही क्या कम है ?

हाथ पकड कर सोयी हुई लडकी को उठाती ह । बच्ची चौक कर जागती ह । हाथा को बढा कर धाय के हाथ पर, चेहरे पर हाथ फिरा कर पहचानने की कोशिश करती ह । स्पश परिचित सा लगते ही लडकी क चेहरे पर मुस्कान फैल जाती है । धाय पोटली अपनी ओर खीच कर उस म से कुछ निकाल कर उसे खाने को देती ह । उसे खाते देख कर खुश होती है । पहली लडकी इस बीच यह सब गौर स देखती रहती ह । उस की आँखें गीली हो जाती ह । धाय उसे देखते ही झुंझला जाती है ।

रोती किसे हो ? अभी तो जिन्दा हूँ मै । सारी उम्र पड़ी है फिर रोने के ही लिये । मैं भी पागल हूँ जो दीवारो से कह रही हूँ । सुनेगा कौन ? माँ बेटी दोनो ही गूंगी-बहरी । बेटी ऊपर से अँधी और । सुन, तू चूल्हा जला । फिर रात अधिक हो जायेगी ।

इशारे से पहली लड़की को चूल्हा जलाने के लिए समझाती है । लड़की उठकर पार्श्व मे चली जाती है ।

यह पोटली भी उधर ही रख दू ।

पोटली उठा कर पार्श्व मे चली जाती है । एक दो पल बाद अँधी लड़की फर्श पर थपथप करती है । एक दो पल ठहर कर धीरे से उठती है और राह टटोलती हुई चलती है । कोने मे पड़े स्टूल से टकराती है । स्टूल पर रखी अटची गिर जाती है । धाय आवाज सुन कर दौड़ी आती है ।

क्या जरूरत आ पड़ी थी उठने की । आ ही तो रही थी मैं इधर, पर तुझे भी क्या पता कि यहाँ कोई नही है ।

हाथ पकड कर पार्श्व मे ले जाती है । लौट कर स्टूल से गिर पड़ा सामान उठा कर सहेजती है । इस कोने को छोड कर सारे मच पर अँधेरा हो जाता है । सामान सहेजते हुए अचानक एक आइग्लास पर नजर पड़ती है । एक आख के आगे लाकर देखती है । इस कोने मे अँधेरा और बाकी मच पर हल्का प्रकाश फैल जाता है जो धीरे धीरे थोड़ा तेज हो जाता है । प्रोफेसर एक ओर कुछ फोटोस्टेट देख रहा है । देखते देखते अचानक उत्तेजित हो जाता है ।

प्रोफेसर *मिल गया मिल गया*

चिल्लाना सुन कर धाय पार्श्व से दौड़ी आती है । पीछे पीछे लड़की है ।

धाय क्या बात है ? चिल्ला क्या रहे हो ? क्या मिल गया ?

आदमी कभी धाय को तो कभी लडकी को पकड कर फिरकी की तरह नाचता है।

प्रोफेसर मेरी खुशी का अन्दाजा नही लगा सकती तुम, धाय माँ! मिल गया। अब नही बच सकता। अब मैं यह लिपि पढ कर ही छोडूगा।

धाय खुद भी परेशान होते हो और दूसरो को भी करते हो। पहले भी कितनी ही बार पढ चुके हो तुम यह सब।

प्रोफेसर नही, सचमुच। ऐसी बात ध्यान मे आ गयी है कि अब यह सब पढ सकूगा मैं। कुछ भी छुपा नही रहेगा मुझ से।

धाय को मुस्कुराता देखकर उत्तजित हो जाता है।

तुम समझती हो मैं पागल हो गया हू जो यो ही चिल्ला रहा हूँ। देखना मैं इस बार अभी जाऊँगा मैं अभी पढ डालूगा। अभी जाता हूँ।

धाय कहा?

प्रोफेसर खण्डहरो मे।

धाय रात का खाना वही भिजवा दू।

प्रोफेसर क्यो?

धाय सुबह तक तो तुम फिर क्या ही लौट सकोगे? थक जाओ तो वही सो जाना।

प्रोफेसर तुम मेरा मजाक उडा रही हो।

धाय नही। अब मुझे वह भी बेकार लगता है।

प्रोफेसर तुम! ओह, इस खुशी के मौके पर भी तुम ठीक है मैं अभी जाता हूँ कम से कम मन्दिर के शिलालेख और उस मूर्ति का रहस्य तो आज ही खोज निकालूगा। देखना तब सारी दुनिया दौडी आयेगी यहाँ और इस रहस्य की खोज का सेहरा मेरे सिर होगा सब को अपना सही इतिहास मुझ से मिलेगा।

धाय तुम से?

प्रोफेसर क्यो? समझता हूँ सब समझता हूँ जो तुम कहना चाहती हो। मैं जो अपना इतिहास भी नही जानता पर वह सब से अलग नहीं है नही अभी वक्त नही है मेरे पास तुम से उलझने का चला तुम मेरे साथ चलो।

लड़की को साथ चलने का इशारा करता है। पार्श्व में जाता है। लड़की पीछे पीछे जाती है। मंच पर धीरे धीरे अँधेरा होता है। फिर प्रकाश होता है। पार्श्व से निकल कर प्रोफेसर और लड़की मंच पर आते हैं। एक कोने में पूरा अँधेरा है। दोनों रोशनी वाले हिस्से में मंच पर चक्कर निकाल कर एक जगह ठहर जाते हैं। प्रोफेसर उत्साहपूर्वक आइग्लास निकाल कर एक शिलालेख पढ़ने का अभिनय करता है। लेकिन शीघ्र ही उस का उत्साह क्षीण होता जाता है। खिन्न हो जाता है। लड़की पास बैठ कर सहानुभूतिपूर्वक देखती हुई कंधे पर हाथ रखती है। प्रोफेसर उसकी ओर देखता है।

प्रोफेसर ठीक कहती है वह। कभी नहीं पढ़ सकूँगा मैं यह लिपि कभी नहीं जान सकूँगा यह रहस्य यह सब रहस्य ही रहेगा हमेशा न भी सही हमेशा पर मेरे लिए तो रहेगा ही अब क्या करूँ मैं? कोई नहीं समझता मेरी पीड़ा कौन जान सकता है जो खुद ऐसी तकलीफ में होगा वही तो जानेगा न तुम भी नहीं समझती तुम तो समझती होगी?

लड़की बड़ी आत्मीयता से उस की ओर देखती है। कंधा थपथपाती है। प्रोफेसर उस का हाथ पकड़ कर उस की ओर देखता है। दोनों की आँखें मिलती हैं। प्रोफेसर अचानक उसे अपने में खींच लेता है। मंच पर अँधेरा हो जाता है। एक कोने में जिस में धाय बैठी है, प्रकाश होता है। धाय आइग्लास लिये देख रही है। लम्बी साँस भर कर आइग्लास और अन्य सामान अटैची में रख कर उसे वापिस स्टूल पर रख देती है। अचानक किसी के खटखटाने की आवाज़। पार्श्व की ओर देखती है। सारे मंच पर प्रकाश। पार्श्व में से एक चेहरा झाँकता है।

नवागन्तुक जी, यहाँ मैं हूँ। अन्दर आ सकता हूँ?

यह कहता हुआ वह अन्दर आ जाता है। वह एक युवक है। पीठ पर सफारी बैग बँधा है। बैग उतार कर नीचे रख देता है। धाय आश्चर्य से उस की ओर देखती है।

आप मुझे नहीं पहचानतीं। यह पता प्रोफेसर साहब के वकील से मिला।

धाय — वकील से?

आगंतुक — जी। पन्द्रह-सोलह वर्ष पहले प्रोफेसर यहीं आये थे न? कहाँ हैं वे? मुझे उन से मिलना है।

इसी बीच लड़की और अँधी पार्श्व से आते हैं। लड़की अँधी का हाथ पकड़े है।

धाय — ये रहे। (अँधी की ओर इशारा करती है।)

आगंतुक — जी!

धाय — ओह, वे प्रोफेसर। वे नहीं रहे। पन्द्रह वर्ष हुए [illegible] काट लिया उन्हें।

आगंतुक — साँप ने काट लिया? कैसे?

धाय — खण्डहरों में गये थे कुछ खोजने।

आगंतुक — आप उन की माँ हैं?

धाय — मैं धाय हूँ उन की।

आगंतुक — तब तो माँ ही हुईं।

आगे बढ़ कर धाय के चरणस्पर्श करता है। धाय आश्चर्य से [illegible] [illegible]।

धाय — पर तुम हो कौन? उन से तुम्हारा क्या रिश्ता है?

आगंतुक — मुझे नहीं मालूम [illegible] शायद रिश्ता कुछ भी नहीं। [illegible] [illegible] का अध्ययन किया है। उन की वसीयत के मुताबिक [illegible] आया हूँ।

धाय — वसीयत? उन की?

आगंतुक — जी हाँ। वसीयत के मुताबिक उन के [illegible] [illegible] बाद [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के कारण [illegible] [illegible] [illegible]।

धाय — है, ना?

आगंतुक — [illegible]

धाय — [illegible]

[illegible]

नवागन्तुक मण्डहरों के रहस्य खोजने का। (कुछ रुक कर) मैं यहाँ रह सकता हूँ न ?

धाय यहाँ ?

नवागन्तुक यहाँ और कोई जगह नहीं है जहां रहा जा सकता हो। और फिर आप तो प्रोफेसर साहब की माँ हैं।

धाय माँ नहीं, धाय। खैर रहो, चाहो तो। प्रोफेसर के ही कमरे में रहो। अच्छा ही है। कोई बात करने को तो मिलेगा। लेकिन तुम हो कौन ? तुम्हारे माता पिता, परिवार ?

नवागन्तुक कुछ पता नहीं। अनाथालय में पला कोई डाल गया था वहां। माँ कौन बाप कौन ? कुछ नहीं मालूम।

उदास हो जाता है। धाय उस की ओर देख कर अंधी की ओर देखती है। फिर उस की ओर। फिर अंधी की ओर। अचानक जोर जोर से पागल-सी हँसने लगती है। नवागन्तुक कुछ समझ नहीं पा रहा है। आश्चर्यचकित सा धाय की ओर देख कर लड़की और अंधी की ओर देखता है। फिर हँसती हुई धाय की ओर। अचानक दृश्य स्थिर हो जाता है। सब अँधेरा छा जाता है।





नन्दकिशोर आचार्य

— 31 अगस्त, 1945 को बीकानेर (राज) मे जन्म

— एम ए (इतिहास एव अंग्रेजी साहित्य)
पीएच डी (इतिहास)

— स्कूल मे अध्यापन, पत्रकारिता और प्रौढ शिक्षण कम मे बाद सम्प्रति रामपुरिया कालेज, बीकानेर मे अध्यापन।

— 'एवरीमेस साप्ताहिक मे उपसम्पादन, 'नया प्रतीक' मे सहसम्पादन, 'सप्ताहान्त' साप्ताहिक मे सहयाग सम्पादन और काव्य पत्रिका 'चिति' तथा 'अरमरु और साप्ताहिक 'मरुदीप' का सम्पादन। 'इतवारी पत्रिका', 'राजस्थान पत्रिका' तथा 'शिविरा पत्रिका मे लम्बे समय तक स्तम्भ-लेखन।

— राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा मीरा पुरस्कार से सम्मानित।

— वत्सल निधि के न्यासधारी

— जल है जहाँ (काव्य)
वह एक समुद्र था (काव्य)
शब्द भूले हुए (काव्य)
कुछ कविताएँ 'चौथा सप्तक' (स अज्ञेय) म सकलित
अज्ञेय की काव्य तितीर्षा (आलाचना)
रचना का सच (आलाचना)
सर्जक का मन (आलाचना)
पागलघर (नाटक)
दी कल्चरल पॉलिटी ऑफ दी हिन्दूज (शोध)
दी पॉलिटी इन शुक्रनीतिसार (शोध)
सस्कृति का व्याकरण (समाजदर्शन)
आधुनिक विचार और शिक्षा (शिक्षा-दर्शन)